

CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2026 with Solution PDF-Set 2/4/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)



निर्धारित समय: 3 Hours

अधिकतम अंक: 80

सामान्य निर्देश

- (i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- (ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
- (iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. मानव के संवाद करने, जानकारी प्राप्त करने और बाह्य दुनिया के समक्ष स्वयं को अभिनीत करने की शैली में परिवर्तन लाकर सोशल मीडिया आधुनिक युग का सर्वव्यापी पहलू बन गया है। इसने सूचना के प्रसार को अत्यंत त्वरित बना दिया है और यह सभी आयु समूहों के लिए एक आसान माध्यम बन चुका है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, लिंकडइन, यूट्यूब, आदि उपयोगकर्ता को अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करने और सामाजिक तौर पर सक्रिय रहने का अवसर प्रदान करते हैं। इसका महत्व समय के साथ बढ़ता ही जा रहा है। यह न केवल व्यक्तिगत जीवन के लिए एक प्रभावी माध्यम है, बल्कि यह शिक्षा, व्यापार और यहाँ तक कि राजनीति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसने सूचना के प्रसार को अत्यधिक तेज़ और सस्ता बना दिया है। इसके जरिए लोग घटनाओं का सीधा प्रसारण विश्व के किसी भी कोने से देख सकते हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा के क्षेत्र में तो इसने एक क्रांति सी ला दी है। छात्रों के लिए यह किसी वरदान से कम नहीं है। व्यावसायिक गतिविधियाँ-जैसे उत्पादों और सेवाओं का प्रचार करना, ग्राहकों से जुड़ना, विपणन अभियानों को तेज़ी से फैलाने में भी यह मदद करता है।

सोशल मीडिया जहाँ सकारात्मक भूमिका अदा कर रहा है वहीं समाज पर इसका दुष्प्रभाव भी देखने को मिल रहा है। लोग तनाव और अवसाद से प्रभावित हो रहे हैं, अकेलापन बढ़ रहा है, अनिद्रा की समस्या बढ़ रही है। इसने आत्ममुग्धता को बढ़ाया है। अपनी निजी ज़िंदगी के बारे में लिखना, अपनी आत्मीय तस्वीरें शेयर करना, चौबीसों घंटे सोशल मीडिया पर उपस्थित रहना बेचैनी को बढ़ा सकता है। आपको याद रखना चाहिए कि इस मंच पर आने वाले आपके आभासी मित्र, सच्चे मित्र या हितैषी नहीं होते। लोग आपकी उपस्थिति का लाभ उठाकर आपको धोखा-धड़ी का शिकार बना लेते हैं। 'लाइक' और 'कमेंट' की अपेक्षा हमारे मस्तिष्क की लय बिगाड़ देते हैं। वैज्ञानिक इसकी लत को खराब जीवन-शैली से होने वाली बीमारियों में सबसे ऊपर रखते हैं।

यद्यपि यह लोगों से जुड़ने, सूचना के प्रचार-प्रसार, समुदाय में अहम भूमिका निभा रहा है लेकिन इसके अति प्रयोग से बचना चाहिए।

[10 अंक]

1(i). निम्नलिखित में से सोशल मीडिया का प्रकार नहीं है :

[1 अंक]

- (A) इंस्टाग्राम
- (B) व्हाट्सएप
- (C) ट्विटर
- (D) फेसबुक

सही उत्तर: (B) व्हाट्सएप

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न में दिए हुए उदाहरणों और विकल्पों का मिलान किया जाता है।
- प्रश्न के नकारात्मक शब्द पर ध्यान देकर उस विकल्प को अलग करना है जिसका उल्लेख गद्यांश की सूची में नहीं हुआ है।

चरण 1: सूची से मिलान गद्यांश सोशल मीडिया के उदाहरणों में फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, लिंकडइन और यूट्यूब गिनाता है। अतः विकल्प (A) इंस्टाग्राम, (C) ट्विटर और (D) फेसबुक सीधे इसी सूची में आते हैं और प्रश्न के नकारात्मक निर्देश के अनुसार नहीं चुने जाएँगे।

चरण 2: शेष विकल्प की पहचान व्हाट्सएप का नाम गद्यांश की दी हुई सूची में नहीं है। इसलिए इस पाठाधारित प्रश्न में अपेक्षित चयन व्हाट्सएप है। यहाँ चयन का आधार गद्यांश में प्रस्तुत नामों की सूची है; केवल सूची में अनुपस्थित होने से किसी मंच का वास्तविक वर्गीकरण सिद्ध नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश की उदाहरण-सूची के आधार पर अपेक्षित उत्तर (B) व्हाट्सएप है।

त्वरित सुझाव: नकारात्मक प्रश्न में पहले अनुच्छेद की उदाहरण-सूची से सभी विकल्पों का मिलान करें।

1(ii). सोशल मीडिया की लोकप्रियता का नकारात्मक प्रभाव है :

[1 अंक]

- (A) सूचनाओं का त्वरित प्रसारण
 - (B) दुनियाभर से जुड़ने का अवसर
 - (C) आत्ममोह की संस्कृति को बढ़ावा
 - (D) व्यावसायिक गतिविधियों में योगदान
- सही उत्तर:** (C) आत्ममोह की संस्कृति को बढ़ावा

हल:

अवधारणा:

- सकारात्मक उपयोग और नकारात्मक मानसिक प्रभाव में अंतर पहचानना इस प्रश्न का आधार है।
- गद्यांश में आत्ममुग्धता बढ़ने की बात नकारात्मक प्रभावों के प्रसंग में आई है।

चरण 1: नकारात्मक प्रभाव पहचानें गद्यांश बताता है कि सोशल मीडिया ने आत्ममुग्धता को बढ़ाया है। अपनी निजी बातें और तस्वीरें लगातार साझा करना तथा प्रतिक्रियाओं की अपेक्षा रखना इसी प्रवृत्ति से जुड़ा है। विकल्प (C) का आत्ममोह इसी आत्ममुग्धता का समानार्थी भाव है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच सूचनाओं का त्वरित प्रसारण (A), दुनियाभर से जुड़ने का अवसर (B) और व्यावसायिक गतिविधियों में योगदान (D) गद्यांश में उपयोगिता के रूप में बताए गए हैं। ये लाभ हैं, इसलिए नकारात्मक प्रभाव पूछे जाने पर इनका चयन नहीं होगा।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) आत्ममोह की संस्कृति को बढ़ावा है।

त्वरित सुझाव: लाभ वाले अनुच्छेद और हानि वाले अनुच्छेद को अलग करके विकल्प की प्रकृति पहचानें।

1(iii). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : सोशल मीडिया का महत्त्व समय के साथ बढ़ता ही जा रहा है।

कारण : सामाजिक संरचना के सुदृढ़ीकरण और रचनात्मक क्षमता के प्रदर्शन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

विकल्प :

[1 अंक]

- (A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।
- (B) कारण सही है, किंतु कथन गलत है।
- (C) कथन सही है, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता अलग-अलग जाँचना आवश्यक है।
- दोनों सत्य होने पर यह देखना होता है कि कारण कथन के पीछे की वजह स्पष्ट करता है या नहीं।

चरण 1: कथन की सत्यता गद्यांश सीधे कहता है कि सोशल मीडिया का महत्त्व समय के साथ बढ़ता जा रहा है। शिक्षा, व्यापार और राजनीति में उसकी भूमिका इस कथन को पुष्ट करती है। अतः कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता गद्यांश उपयोगकर्ता को रचनात्मकता प्रदर्शित करने और सामाजिक तौर पर सक्रिय रहने के अवसर मिलने की बात कहता है। लोगों से जुड़ना और समुदाय में भूमिका निभाना सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ करने का आधार है। इसलिए कारण भी गद्यांशानुकूल है।

चरण 3: व्याख्यात्मक संबंध और विकल्प सामाजिक जुड़ाव और रचनात्मक अभिव्यक्ति के अवसर उसकी उपयोगिता बढ़ाते हैं; यही बढ़ते महत्त्व का कारण है। अतः (A) और (B) सत्यता की दृष्टि से गलत हैं और (C) दोनों के व्याख्यात्मक संबंध को नकारने के कारण गलत है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है : कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

त्वरित सुझाव: पहले कथन, फिर कारण, और अंत में दोनों के बीच वजह का संबंध जाँचें।

1(iv). सोशल मीडिया से क्या अभिप्राय है ?

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अभिप्राय पूछे जाने पर गद्यांश के आधार पर शब्द का आशय और प्रमुख कार्य बताना चाहिए।
- सोशल मीडिया संवाद, सूचना के आदान-प्रदान और स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम है।

चरण 1: अर्थ का आधार आरंभिक वाक्य बताता है कि सोशल मीडिया ने लोगों के संवाद करने, जानकारी पाने और दुनिया के सामने स्वयं को प्रस्तुत करने की शैली बदली है। इसलिए इसकी पहचान केवल मनोरंजन से नहीं, संचार और अभिव्यक्ति से की जाती है।

चरण 2: उदाहरण से स्पष्ट करें फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे मंच उपयोगकर्ताओं को सामाजिक रूप से सक्रिय रहने और अपनी रचनात्मकता दिखाने का अवसर देते हैं। इन कार्यों को एक साथ रखने पर सोशल मीडिया का व्यापक आशय स्पष्ट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष सोशल मीडिया ऐसे डिजिटल संचार मंचों का समूह है जिनसे लोग परस्पर जुड़ते हैं, सूचनाएँ साझा करते हैं तथा अपने विचार और रचनात्मकता व्यक्त करते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में माध्यम के साथ उसके दो प्रमुख कार्य लिखें, केवल उदाहरणों की सूची नहीं।

1(v). सोशल मीडिया के दो सकारात्मक पहलुओं का उल्लेख कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दो सकारात्मक पहलू पूछे जाने पर दो अलग लाभ और उनका संक्षिप्त स्पष्टीकरण देना चाहिए।
- गद्यांश सूचना-प्रसार की गति तथा शिक्षा में उपयोगिता को स्पष्ट लाभ मानता है।

चरण 1: पहला पहलू: त्वरित सूचना-प्रसार सोशल मीडिया ने सूचना का प्रसार अत्यंत तेज़ और सस्ता बनाया है। लोग विश्व के किसी भी कोने में होने वाली घटनाओं का सीधा प्रसारण देख सकते हैं। इस प्रकार दूर की घटना के बारे में जानकारी पाने की सुविधा बढ़ती है। यह गद्यांश में वर्णित सूचना और संपर्क संबंधी सकारात्मक पहलू है।

चरण 2: दूसरा पहलू: शिक्षा में उपयोगिता गद्यांश के अनुसार सोशल मीडिया ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ला दी है और छात्रों के लिए यह किसी वरदान से कम नहीं है। जानकारी प्राप्त करने का आसान माध्यम होने से यह विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया में सहायक बनता है। शिक्षा को सूचना-प्रसार से अलग लाभ के रूप में लिखने पर उत्तर में दो स्पष्ट बिंदु मिलते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सोशल मीडिया के दो सकारात्मक पहलू हैं : सूचनाओं का तेज़ और सस्ता प्रसार तथा शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों के लिए सहायक भूमिका।

त्वरित सुझाव: दो लाभ पूछे जाएँ तो प्रत्येक का अलग कार्य और एक छोटा पाठाधारित स्पष्टीकरण दें।

1(vi). सोशल मीडिया पर 'लाइक' और 'कमेंट' की अपेक्षा हमारे मस्तिष्क की लय बिगाड़ देते हैं। कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न गद्यांश में बताए मानसिक प्रभाव की कारण-परिणाम श्रृंखला स्पष्ट करने को कहता है।
- प्रतिक्रियाओं की लगातार अपेक्षा, बेचैनी और मानसिक शांति में बाधा को आपस में जोड़ना चाहिए।

चरण 1: अपेक्षा से बेचैनी तक अपनी निजी बातों और तस्वीरों को साझा करने वाला व्यक्ति उन पर आने वाले लाइक और कमेंट की प्रतीक्षा करने लगता है। उसका ध्यान बार-बार दूसरों की प्रतिक्रिया पर टिकता है। गद्यांश चौबीसों घंटे उपस्थित रहने और आत्मीय तस्वीरों साझा करने को बेचैनी बढ़ाने से जोड़ता है; इसी संदर्भ में प्रतिक्रियाओं की अपेक्षा का प्रभाव समझना चाहिए।

चरण 2: मानसिक लय पर प्रभाव जब प्रतिक्रिया पाने की चाह लगातार बनी रहती है तो व्यक्ति सहज और शांत नहीं रह पाता। वह अपने अनुभवों से अधिक आभासी स्वीकृति में उलझता है। गद्यांश इसी अति प्रयोग के साथ तनाव, अवसाद, अकेलापन और अनिद्रा बढ़ने की बात कहता है। इसलिए मस्तिष्क की लय बिगाड़ने से आशय मन की सामान्य शांति और संतुलन में बाधा आने से है।

चरण 3: निष्कर्ष लाइक और कमेंट की निरंतर प्रतीक्षा मन को प्रतिक्रियाओं पर निर्भर बनाकर बेचैनी और तनाव बढ़ाती है। इससे मानसिक शांति तथा नींद प्रभावित होती है और मस्तिष्क की सामान्य लय बिगड़ती है।

त्वरित सुझाव: प्रतिक्रिया की चाह से बेचैनी और फिर मानसिक असंतुलन तक की कड़ी साफ़ लिखें।

1(vii). सोशल मीडिया की लत का खराब जीवन-शैली से होने वाली बीमारियों से क्या संबंध है ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तर्कपूर्ण उत्तर में गद्यांश का दावा और उसके समर्थन में बताए प्रभाव जोड़ने चाहिए।
- सोशल मीडिया का अति प्रयोग मानसिक स्वास्थ्य तथा सामान्य जीवनचर्या को प्रभावित करता है।

चरण 1: लत और जीवनचर्या का संबंध गद्यांश के अनुसार चौबीसों घंटे सोशल मीडिया पर उपस्थित रहना बेचैनी बढ़ा सकता है। बार-बार निजी बातें साझा करने और लाइक-कमेंट पाने की चाह व्यक्ति को उससे लगातार जोड़े रखती है। इस तरह उपयोग एक सीमित सुविधा रहने के बजाय लत का रूप लेता है और उसकी सामान्य दिनचर्या तथा आराम पर असर पड़ता है।

चरण 2: स्वास्थ्यगत प्रभाव और तर्क गद्यांश तनाव, अवसाद, अकेलेपन और अनिद्रा को इसके दुष्प्रभाव बताता है। अनिद्रा और निरंतर बेचैनी संतुलित जीवनचर्या को बाधित करती हैं। इसी आधार पर वैज्ञानिक इसकी लत को खराब जीवन-शैली से होने वाली बीमारियों में सबसे ऊपर रखते हैं। यहाँ संबंध अति प्रयोग से उत्पन्न असंतुलन का है; इसलिए अंतिम अनुच्छेद इसके अति प्रयोग से बचने को कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष सोशल मीडिया की लत लगातार ऑनलाइन रहने की आदत बढ़ाकर नींद और मानसिक संतुलन प्रभावित करती है। तनाव, अवसाद, अकेलापन और अनिद्रा जैसे प्रभाव इसे खराब जीवन-शैली से जुड़ी समस्या बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: तर्क में पहले अति प्रयोग की आदत, फिर उसके मानसिक और नींद संबंधी प्रभाव लिखें।

2. सबकी पीड़ा के साथ व्यथा अपने मन की जो जोड़ सके,
मुड़ सके जहाँ तक समय, उसे निर्दिष्ट दिशा में मोड़ सके।
युगपुरुष वही सारे समाज का विहित धर्मगुरु होता है,
सबके मन का जो अंधकार अपने प्रकाश से धोता है।
थे जहाँ सहस्रों वर्ष पूर्व, लगता है वहीं खड़े हैं हम,
है वृथा वर्ग उन गुफावासियों से कुछ बहुत बड़े हैं हम।
अनगढ़ पत्थर से लड़ो, लड़ो किटकिटा नखों से, दाँतों से
या लड़ो ऋक्ष के रोमगुच्छ-पूरित वज्रीकृत हाथों से।
या चढ़ विमान पर नर्म मुट्टियों से गोलों की वृष्टि करो
आ जाय लक्ष्य में जो कोई, निष्ठुर हो सबके प्राण हरो।
ये तो साधन के भेद, किन्तु भावों में तत्त्व नया क्या है ?
क्या खुली प्रेम आँख अधिक ? भीतर कुछ बढ़ी दया क्या है ?
झर गई पूँछ, रोमान्त झरे, पशुता का झरना बाकी है,
बाहर-बाहर तन सँवर चुका, मन अभी सँवरना बाकी है।

[8 अंक]

2(i). कवि को ऐसा क्यों लगता है कि हम सहस्रों वर्ष पूर्व जहाँ थे, आज भी वहीं हैं ?

[1 अंक]

- (A) धरती के भीतर का रहस्य जानना अभी भी बाकी है।
(B) मानव के भीतर पशुता अभी भी शेष है।
(C) आज भी मनुष्य अपने नाखूनों का बढ़ना नहीं रोक पाया है।
(D) आज भी मनुष्य नख-दंत अवलम्बी है।

सही उत्तर: (B) मानव के भीतर पशुता अभी भी शेष है।

हल:

अवधारणा:

- कवि बाहरी प्रगति और मन के नैतिक विकास में अंतर करता है।
- अर्थ का निर्णय पद्यांश की अंतिम पंक्तियों तथा हिंसा के उदाहरणों से करना चाहिए।

चरण 1: प्रमाण पहचानें कवि कहता है कि पूँछ और रोम झड़ गए हैं, किंतु पशुता का झरना बाकी है। प्राचीन मनुष्य पत्थर और नख-दंत से लड़ता था; आधुनिक मनुष्य विमान से गोले बरसाता है। साधन बदले हैं, पर निष्ठुर हिंसा की प्रवृत्ति बनी हुई है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें (B) इसी शेष पशुता को व्यक्त करता है। (A) में धरती के रहस्य की चर्चा पद्यांश में नहीं है। (C) नाखून बढ़ने का जैविक तथ्य है, जो कवि का विषय नहीं है। (D) गलत है, क्योंकि विमान और गोले बताते हैं कि मनुष्य अब केवल नख-दंत पर निर्भर नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष मानव के भीतर पशुता अभी भी शेष है; इसलिए सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: समय में ठहराव का कारण खोजते हुए अंतिम दो पंक्तियों में शेष बची प्रवृत्ति पहचानें।

2(ii). 'ये तो साधन के भेद' – पंक्ति में 'साधन' से आशय है :

[1 अंक]

- (A) जीवनयापन के साधन
 - (B) लक्ष्य प्राप्ति के अस्त्र-शस्त्र
 - (C) जीविकोपार्जन के माध्यम
 - (D) शत्रु को भयभीत करने के तरीके
- सही उत्तर:** (B) लक्ष्य प्राप्ति के अस्त्र-शस्त्र

हल:

अवधारणा:

- किसी शब्द का अर्थ उसके निकट दिए गए उदाहरणों से स्पष्ट होता है।
- यहाँ पत्थर, नख-दंत, कठोर हाथ और विमान से बरसाए गोले युद्ध के उपकरण हैं।

चरण 1: प्रसंग समझें कवि प्राचीन और आधुनिक लड़ाई की तुलना करता है। पहले पत्थर, नख और दाँत से प्रहार होता था; अब विमान से गोले बरसाकर प्राण हरे जाते हैं। इसलिए साधन का संबंध लक्ष्य पर आक्रमण करने वाले अस्त्र-शस्त्रों से है।

चरण 2: सभी विकल्प जाँचें (B) इन युद्ध-साधनों को समेटता है। (A) जीवनयापन तथा (C) जीविका कमाने से जुड़े हैं; पद्यांश में उस प्रसंग की चर्चा नहीं है। (D) केवल भयभीत करने तक सीमित है, जबकि कविता में लक्ष्य पर प्रहार करके प्राण लेने का स्पष्ट वर्णन है।

चरण 3: निष्कर्ष साधन से आशय लक्ष्य प्राप्ति के अस्त्र-शस्त्र हैं। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: साधन का अर्थ तय करने से पहले उसके ठीक ऊपर आए पत्थर, नख-दंत और गोलों के उदाहरण जोड़ें।

2(iii). 'बाहर-बाहर तन सँवर चुका' – से क्या अभिप्राय है ?

[1 अंक]

- (A) सौंदर्य प्रसाधनों से शारीरिक सुंदरता का बढ़ जाना
 - (B) शरीर के अनावश्यक अंगों का झड़ जाना
 - (C) मनुष्य की शारीरिक बनावट का सुंदर हो जाना
 - (D) मनुष्य और पशुओं के बीच अंतर दृष्टिगत होना
- सही उत्तर:** (C) मनुष्य की शारीरिक बनावट का सुंदर हो जाना

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ में मूल पंक्ति का व्यापक आशय ग्रहण करना चाहिए।
- कवि तन के बाहरी परिवर्तन के सामने मन की शेष असंस्कृत अवस्था रखता है।

चरण 1: पंक्ति को प्रसंग से जोड़ें पूँछ और रोम झड़ने का उल्लेख मनुष्य के बाहरी विकास का संकेत है। अगले वाक्य में तन सँवरने और मन के अभी न सँवरने का विरोध है। इस प्रकार मानव की शारीरिक बनावट विकसित और सुंदर हुई है, पर उसके भावों में अपेक्षित दया नहीं बढ़ी है।

चरण 2: विकल्पों में अंतर करें (C) बाहरी शारीरिक बनावट के सुंदर होने का व्यापक आशय बताता है। (A) सौंदर्य प्रसाधनों की बात करता है, जिनका उल्लेख नहीं है। (B) पिछली पंक्ति के अंग झड़ने के उदाहरण तक सीमित है। (D) मनुष्य और पशु के अंतर का परिणाम बताता है, जबकि पूछी गई पंक्ति मुख्यतः तन के सँवरने पर केंद्रित है।

चरण 3: निष्कर्ष इससे मनुष्य की शारीरिक बनावट का सुंदर हो जाना अभिप्रेत है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पिछली पंक्ति के उदाहरण और पूछी गई पंक्ति के समग्र आशय में अंतर रखकर विकल्प चुनें।

2(iv). 'भावों में तत्त्व नया क्या है' – पंक्ति में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यंग्य में किसी दावे और वास्तविक व्यवहार के विरोध को उभारा जाता है।
- कवि तकनीकी उन्नति के साथ प्रेम और दया में बढ़ोतरी न होने पर प्रश्न करता है।

चरण 1: विरोध स्पष्ट करें मनुष्य अपने को गुफावासियों से अधिक विकसित मानता है। उसके युद्ध के उपकरण पत्थरों से बढ़कर विमान और गोलों तक पहुँच गए हैं, लेकिन वह अब भी निष्ठुर होकर दूसरों के प्राण हरता है।

चरण 2: व्यंग्य का लक्ष्य बताएँ भावों में नया तत्त्व पूछकर कवि बाहरी प्रगति के अहंकार पर चोट करता है। हिंसा बनी रहे और प्रेम तथा दया न बढ़ें तो केवल विनाश के उपकरण बदलने से मनुष्य वास्तव में सभ्य नहीं बन जाता।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति में व्यंग्य है कि आधुनिक साधनों के बावजूद मनुष्य की हिंसक भावनाएँ पुरानी हैं; उसके सभ्य होने का दावा अधूरा है।

त्वरित सुझाव: व्यंग्य लिखते समय उन्नत उपकरणों और अपरिवर्तित हिंसक भावनाओं का विरोध स्पष्ट करें।

2(v). 'मन अभी सँवरना बाकी है' – कवि ने ऐसा क्यों कहा है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में सच्ची उन्नति का आधार प्रेम, दया और दूसरों की पीड़ा से जुड़ना है।
- बाहरी शरीर का विकास मन की हिंसक वृत्तियों को अपने आप समाप्त नहीं करता।

चरण 1: बाहरी विकास की सीमा स्पष्ट करें कवि के अनुसार मनुष्य का शरीर सँवर चुका है। पूँछ और रोम झड़ने के संकेत बाहरी परिवर्तन दिखाते हैं; विमान और गोले उसके साधनों की प्रगति बताते हैं। फिर भी वह लक्ष्य में आए किसी भी व्यक्ति को निष्ठुरता से मार सकता है। इससे पता चलता है कि बाहरी परिवर्तन के साथ संवेदनशीलता का विकास नहीं हुआ है।

चरण 2: मन सँवरने का आशय बताएँ मन का सँवरना पशुता और क्रूरता को त्यागकर प्रेम, करुणा तथा सहानुभूति अपनाना है। कवि पूछता है कि प्रेम की आँख अधिक खुली है या भीतर दया बढ़ी है। आरंभ में वह ऐसे व्यक्ति को महत्त्व देता है जो अपनी व्यथा को सबकी पीड़ा से जोड़ सके और दूसरों का अंधकार दूर कर सके। ये गुण विकसित हुए बिना मनुष्य का आंतरिक विकास अधूरा रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने ऐसा इसलिए कहा है कि शारीरिक और तकनीकी प्रगति के बावजूद मनुष्य में हिंसा तथा निष्ठुरता शेष हैं। प्रेम, दया और परपीड़ा की अनुभूति विकसित करके ही उसका मन सँवर सकता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में बाहरी विकास का एक उदाहरण और भीतर अपेक्षित प्रेम-दया का विकास, दोनों अवश्य जोड़ें।

2(vi). वज्रीकृत हाथों से या नर्म मुट्ठियों से लड़ना कवि की दृष्टि में एक समान क्यों है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि किसी क्रिया का मूल्यांकन उसके साधन के साथ उसके भाव और परिणाम से करता है।
- हाथों की कठोरता या कोमलता से हिंसा की निष्ठुरता कम नहीं हो जाती।

चरण 1: दोनों प्रकार की लड़ाई पहचानें वज्रीकृत हाथों से लड़ना आदिम मनुष्य के कठोर शारीरिक प्रहार का संकेत है। नर्म मुट्ठियों से

लड़ने में आधुनिक मनुष्य विमान पर चढ़कर गोले बरसाता है। पहली स्थिति में शरीर की शक्ति और दूसरी में विकसित उपकरण काम आते हैं। अंतर प्रहार के तरीके और इस्तेमाल किए गए साधनों का है।

चरण 2: भाव और परिणाम की समानता समझाएँ दोनों ही स्थितियों में मनुष्य दूसरे को आघात पहुँचाता है और उसके प्राण लेता है। आधुनिक हाथ कोमल दिखाई दे सकते हैं, किंतु दूर से गोले गिराने वाले मन में दया न हो तो उसका व्यवहार भी उतना ही निष्ठुर है। कवि का प्रश्न है कि साधन बदलने पर प्रेम और करुणा में क्या वृद्धि हुई। जब हिंसा और क्रूरता का भाव समान है, तो बाहरी कोमलता श्रेष्ठता का प्रमाण नहीं बनती।

चरण 3: निष्कर्ष कवि की दृष्टि में दोनों समान हैं, क्योंकि साधन अलग होने पर भी दोनों में हिंसा, निष्ठुरता और प्राणहरण की प्रवृत्ति एक जैसी है। वास्तविक अंतर प्रेम तथा दया बढ़ने से आएगा।

त्वरित सुझाव: कठोर और कोमल हाथों की बनावट के स्थान पर उनके हिंसक भाव तथा प्राणहरण के परिणाम की तुलना करें।

3(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

आपके क्षेत्र के स्थानीय पार्क का नगर निगम द्वारा सौंदर्यीकरण किया गया और बच्चों और बड़ों के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए उसमें व्यायाम करने की मशीनें भी लगाई गईं। नगर निगम अधिकारियों की सराहना करते हुए स्थानीय समाचार-पत्र में प्रकाशन हेतु भेजने के लिए सुरभि/सौरभ की ओर से एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रिपोर्ट किसी घटना या कार्य का तथ्यपरक, संक्षिप्त और व्यवस्थित विवरण है। इसमें शीर्षक, स्थान, तिथि और रिपोर्टकर्ता का नाम दिया जाता है।
- इस रिपोर्ट का केंद्र पार्क का सौंदर्यीकरण, व्यायाम की मशीनें और जनस्वास्थ्य के लिए नगर निगम का योगदान है। सराहना तथ्य के आधार पर होनी चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना पहले कार्य की उपलब्धि बताने वाला शीर्षक दें, फिर रिपोर्टकर्ता का नाम तथा स्थान और तिथि लिखें। मुख्य विवरण में पार्क का सौंदर्यीकरण और बच्चों तथा बड़ों के लिए लगाई गई व्यायाम की मशीनों का उल्लेख करें। अंत में नागरिकों को होने वाला लाभ और नगर निगम के प्रति आभार रखें। दिए गए प्रसंग में कोई अधिकारी, खर्च या समारोह निर्दिष्ट नहीं है; इसलिए ऐसे अनावश्यक विवरण जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। प्रकाशन हेतु भाषा स्पष्ट, औपचारिक और संयत रखें।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों की आदर्श रिपोर्ट सँवरा पार्क, स्वस्थ जीवन की पहल

रिपोर्टकर्ता : सुरभि

नई दिल्ली, 15 मार्च 2026। नगर निगम ने स्थानीय पार्क का सौंदर्यीकरण कर क्षेत्रवासियों को सुंदर और उपयोगी सार्वजनिक स्थल उपलब्ध कराया है। बच्चों और बड़ों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए पार्क में व्यायाम की मशीनें भी लगाई गई हैं। इससे लोगों को सैर के साथ नियमित व्यायाम का अवसर मिलेगा। यह पहल स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरक है। नागरिकों ने नगर निगम के अधिकारियों के प्रयासों की सराहना की है। पार्क की स्वच्छता और मशीनों की देखभाल बनाए रखना सभी की साझा जिम्मेदारी है।

चरण 3: निष्कर्ष रिपोर्ट में सौंदर्यीकरण और व्यायाम की सुविधाओं का तथ्यपरक विवरण देते हुए नगर निगम की जनहितकारी पहल की सराहना की गई है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक, रिपोर्टकर्ता, स्थान और तिथि के बाद कार्य, उसका जनलाभ और संयत सराहना लिखें; मुख्य विवरण को लगभग 80 शब्दों तक सीमित रखें।

3(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

समाचार पत्र का ही अंश होते हुए भी फ़ीचर समाचार से भिन्न कैसे है ? स्पष्ट कीजिए।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार का प्रमुख उद्देश्य किसी नवीन और महत्वपूर्ण घटना की तथ्यपूर्ण सूचना देना है, जबकि फ़ीचर विषय की रोचक, संवेदनात्मक और विस्तृत प्रस्तुति करता है।
- दोनों पत्रकारिता की विधाएँ हैं और दोनों का आधार प्रामाणिक तथ्य होते हैं। अंतर मुख्यतः उद्देश्य, समयबद्धता, भाषा और प्रस्तुति में होता है।

चरण 1: तुलना के आधार पहचानें उत्तर में पहले समाचार और फ़ीचर का साझा आधार स्पष्ट करें। फिर समाचार की तात्कालिकता तथा सूचना देने की प्राथमिकता की तुलना फ़ीचर की विषयगत गहराई और मानवीय रुचि से करें। समाचार में प्रमुख तथ्य आरंभ में आते हैं; फ़ीचर का आरंभ दृश्य, प्रसंग या अनुभव से भी हो सकता है। फ़ीचर की रोचकता का अर्थ मनगढ़ंत तथ्य लिखना नहीं है। उसकी साहित्यिक और चित्रात्मक शैली भी तथ्यगत विश्वसनीयता बनाए रखती है। तुलना को स्पष्ट और संतुलित रखना चाहिए।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर फ़ीचर समाचार-पत्र का अंश होते हुए भी समाचार से उद्देश्य और प्रस्तुति में भिन्न है। समाचार ताजा घटना की तथ्यपरक सूचना तत्काल देता है; फ़ीचर किसी विषय की पृष्ठभूमि, मानवीय पक्ष और अनुभवों को विस्तार से उभारता है। समाचार सामान्यतः उलटा पिरामिड शैली में लिखा जाता है, जबकि फ़ीचर का आरंभ रोचक प्रसंग या दृश्य से हो सकता है। समाचार की भाषा सीधी और संक्षिप्त होती है; फ़ीचर की भाषा चित्रात्मक, सरस और संवेदनशील होती है। फ़ीचर के लिए तात्कालिक घटना अनिवार्य नहीं, किंतु तथ्यगत प्रामाणिकता आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार में नवीन सूचना और तात्कालिकता प्रमुख हैं, जबकि फ़ीचर में विषय का रोचक विस्तार, पृष्ठभूमि तथा मानवीय संवेदना प्रमुख हैं।

त्वरित सुझाव: समाचार और फ़ीचर की तुलना उद्देश्य, तात्कालिकता, शैली और भाषा पर करें; फ़ीचर को कभी काल्पनिक या तथ्यहीन रचना न बताएँ।

3(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

संवाद नाटक के प्राण हैं। कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय संवाद लिखते समय बरती जाने वाली सावधानियों का उल्लेख कीजिए।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाटक में संवाद पात्रों के चरित्र, मनोभाव और पारस्परिक संबंधों को सामने लाते हैं तथा कथानक को आगे बढ़ाते हैं।
- कहानी के वर्णन को मंच पर बोली जा सकने वाली सहज भाषा और अभिनययोग्य क्रिया में बदलना आवश्यक है।

चरण 1: संवादों की भाषा और उद्देश्य पहचानिए रूपांतरण में कहानी के लंबे वर्णन ज्यों के त्यों पात्रों से नहीं बुलवाने चाहिए। संवाद बोलचाल के, संक्षिप्त और पात्र की आयु, शिक्षा, सामाजिक स्थिति तथा मनःस्थिति के अनुकूल हों। हर संवाद किसी भावना, संबंध या घटना को स्पष्ट करे। संवाद लिखते समय यह भी देखना चाहिए कि पात्र एक-दूसरे की बात पर स्वाभाविक प्रतिक्रिया दें। केवल दर्शकों को जानकारी देने के लिए अस्वाभाविक कथन न रखे जाएँ। मंच पर जो बात क्रिया, हावभाव या मौन से प्रकट हो सकती है, उसे अनावश्यक शब्दों में न दोहराएँ। संवादों में संघर्ष और जिज्ञासा बनी रहे। भाषा इतनी स्पष्ट हो कि दर्शक सुनते ही अर्थ समझ सकें; साथ ही मूल कथा की संवेदना और पात्रों की विशिष्टता बनी रहे।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय संवाद सहज, संक्षिप्त, प्रभावपूर्ण तथा बोलचाल की भाषा में होने चाहिए। वे पात्रों की आयु, स्वभाव, सामाजिक स्थिति और मनःस्थिति के अनुकूल हों। संवादों से कथानक आगे बढ़े तथा पात्रों का चरित्र और अंतर्द्वंद्व उभरे। लंबे वर्णन, अनावश्यक दोहराव और उपदेशात्मक भाषणों से बचना चाहिए। संवाद अभिनययोग्य हों और

उनकी लय, विराम तथा भाव के लिए आवश्यक रंगनिर्देश दिए जाएँ। मूल कहानी का आशय सुरक्षित रहे और कथावाचक के वर्णन को आवश्यकतानुसार संवाद तथा मंचीय क्रिया में बदला जाए।

चरण 3: निष्कर्ष प्रभावी नाट्य संवाद पात्रानुकूल भाषा में कथा, चरित्र और संघर्ष को मंच पर जीवंत करते हैं।

त्वरित सुझाव: संवाद की जाँच तीन कसौटियों पर करें—क्या वह पात्र के अनुकूल है, बोलने में सहज है और कथानक को आगे बढ़ाता है?

4(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

पत्रकारीय लेखन का सबसे जाना-माना रूप क्या है ? इसके लिए समाचार लेखन की शैली का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारीय लेखन का सर्वाधिक परिचित रूप समाचार लेखन है। इसमें तथ्य प्रमुख होते हैं।
- उल्टा पिरामिड शैली में सूचनाएँ महत्त्व के घटते क्रम में रखी जाती हैं।

चरण 1: शैली का क्रम समझिए समाचार के आरंभिक भाग, अर्थात् मुखड़े में घटना की सबसे महत्वपूर्ण सूचना दी जाती है। उसके बाद विवरण, पृष्ठभूमि और अन्य तथ्य आते हैं। पाठक आरंभ पढ़कर मुख्य घटना समझ लेता है; स्थान कम होने पर अंतिम गौण अंश हटाने से प्रमुख सूचना सुरक्षित रहती है। यह शैली कालक्रम के बजाय समाचार-मूल्य को प्राथमिकता देती है। इसलिए घटना की शुरुआत से पूरा वृत्तांत सुनाना इसका आवश्यक नियम नहीं है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर पत्रकारीय लेखन का सबसे जाना-माना रूप समाचार लेखन है। इसकी प्रमुख शैली उल्टा पिरामिड है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण सूचना मुखड़े में दी जाती है। इसके बाद विवरण और पृष्ठभूमि तथा अंत में अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण तथ्य रखे जाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार लेखन की उल्टा पिरामिड शैली प्रमुख सूचना से गौण विवरण की ओर बढ़ती है।

त्वरित सुझाव: उल्टा पिरामिड याद रखने के लिए क्रम रखें—मुख्य सूचना, विस्तृत विवरण, फिर कम महत्वपूर्ण तथ्य।

4(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

वे कौन-सी सुविधाएँ हैं जो मुद्रित माध्यमों के पाठकों को उपलब्ध हैं लेकिन रेडियो के श्रोताओं को नहीं ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुद्रित सामग्री पाठक के सामने स्थिर रहती है; रेडियो का प्रसारण समय के साथ आगे बढ़ जाता है।
- मुद्रित माध्यम में पढ़ने की गति, क्रम और पुनर्पाठ पर पाठक का नियंत्रण होता है।

चरण 1: पाठक और श्रोता की स्थितियाँ समझिए पाठक किसी कठिन शब्द पर रुक सकता है, अर्थ खोज सकता है और पहले की पंक्तियाँ फिर पढ़ सकता है। वह चित्र, तालिका तथा शीर्षक भी देखता है। सामान्य रेडियो प्रसारण में श्रोता को सूचना उसी समय सुनकर समझनी पड़ती है; छूटा अंश अपनी इच्छा से दोबारा नहीं सुन सकता।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर मुद्रित माध्यम का पाठक अपनी सुविधानुसार पढ़ सकता है, रुककर सोच सकता है तथा कठिन या छूटे अंश को दोबारा पढ़ सकता है। वह चित्र और तालिकाएँ भी देख सकता है। रेडियो के श्रोता को ये सुविधाएँ नहीं मिलतीं; प्रसारण लगातार आगे बढ़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष मुद्रित माध्यम पुनर्पाठ और दृश्य सहायता देता है, जबकि रेडियो में श्रोता को तत्काल सुनकर अर्थ ग्रहण करना होता है।

त्वरित सुझाव: तुलना में तीन बिंदु अवश्य रखें—अपनी गति से पढ़ना, दोबारा पढ़ना और चित्र या तालिकाएँ देखना।

4(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

पिछले कुछ वर्षों में आर्थिक पत्रकारिता के महत्त्व के बढ़ने का कारण स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आर्थिक पत्रकारिता अर्थव्यवस्था, उद्योग, व्यापार, बाजार और आर्थिक नीतियों से जुड़ी सूचनाएँ तथा उनका विश्लेषण प्रस्तुत करती है।
- इसका महत्त्व आर्थिक गतिविधियों के विस्तार और सामान्य नागरिक के जीवन पर उनके बढ़ते प्रभाव से समझना चाहिए।

चरण 1: आर्थिक परिवर्तनों का प्रभाव समझना उदारीकरण और वैश्वीकरण के बाद व्यापार, उद्योग, निजी क्षेत्र तथा बाजार का विस्तार हुआ। आर्थिक नीतियों और बाजार में होने वाले बदलाव अब लोगों के रोजगार, आय और दैनिक खर्च को सीधे प्रभावित करते हैं। इसलिए आर्थिक समाचारों की उपयोगिता बढ़ी है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर उदारीकरण और वैश्वीकरण से आर्थिक गतिविधियों तथा बाजार का विस्तार हुआ है। आम लोगों की रोजगार, बचत, निवेश और उपभोग संबंधी निर्भरता आर्थिक नीतियों पर बढ़ी है। इन्हें समझने और सही निर्णय लेने की आवश्यकता से आर्थिक पत्रकारिता का महत्त्व बढ़ा है।

चरण 3: निष्कर्ष आर्थिक बदलावों के दैनिक जीवन से बढ़ते संबंध और उपयोगी आर्थिक जानकारी की आवश्यकता ने आर्थिक पत्रकारिता को अधिक महत्त्वपूर्ण बनाया है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में उदारीकरण और वैश्वीकरण को सामान्य नागरिक की आर्थिक जानकारी तथा निर्णय लेने की आवश्यकता से जोड़िए।

4(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

कहानी के संवादों को नाट्य रूपांतरण करते समय किस तरह प्रभावशाली बनाया जा सकता है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाटक में संवाद पात्रों के स्वभाव, संघर्ष और संबंधों को अभिनय के माध्यम से सामने लाते हैं।
- नाट्य रूपांतरण में कहानी के वर्णन को मंच पर बोलने योग्य, स्वाभाविक और उद्देश्यपूर्ण संवादों में बदलना आवश्यक है।

चरण 1: संवादों की नाटकीय उपयोगिता पहचानना कहानी में कथावाचक जिन बातों का वर्णन करता है, नाटक में उन्हें पात्रों की बातचीत और क्रिया से व्यक्त करना होता है। इसलिए संवाद केवल सूचना देने वाले न हों; वे पात्र का मनोभाव प्रकट करें और दृश्य की घटना को आगे बढ़ाएँ।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर संवाद पात्रों की आयु, स्वभाव, सामाजिक स्थिति और प्रसंग के अनुरूप, सहज तथा संक्षिप्त होने चाहिए। वे कथानक को आगे बढ़ाएँ और भावों तथा संघर्ष को उभारें। उचित विराम, स्वर, हाव-भाव एवं अभिनय-संकेत जोड़कर उन्हें मंच पर अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष पात्रानुकूल भाषा, संक्षिप्तता, नाटकीय क्रिया तथा भावानुकूल प्रस्तुति से कहानी के संवाद मंच पर प्रभावशाली बनते हैं।

त्वरित सुझाव: संवाद सुधारते समय तीन बातें जाँचिए: कौन बोल रहा है, किस परिस्थिति में बोल रहा है और उससे दृश्य कैसे आगे बढ़ता है।

4(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

विचार करने और उसे व्यक्त करने की प्रक्रिया निबंध लेखन के परंपरागत विषयों में क्यों घटित नहीं हो पाती ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेखन में लेखक अपने अनुभवों पर विचार करके उन्हें स्वतंत्र और मौलिक ढंग से अभिव्यक्त करता है।
- बार-बार लिखे जाने वाले परंपरागत निबंध-विषयों पर तैयार सामग्री का अभ्यास स्वतंत्र चिंतन को सीमित कर सकता है।

चरण 1: परंपरागत विषयों की समस्या समझना परंपरागत विषय परिचित होने के कारण उनके लिए पहले से तैयार विचार, भूमिका और निष्कर्ष आसानी से मिल जाते हैं। विद्यार्थी कई बार अपने अनुभवों से विषय को देखने के स्थान पर यही सामग्री याद करके लिख देते हैं। इससे नई दृष्टि विकसित करने का अवसर घटता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर परंपरागत निबंध-विषयों पर विद्यार्थी प्रायः तैयार सामग्री और रटे हुए विचार लिखते हैं। विषय परिचित होने से वे अपने अनुभवों पर स्वतंत्र चिंतन तथा नई अभिव्यक्ति का प्रयास नहीं करते। फलतः विचार खोजने और उन्हें मौलिक रूप में व्यक्त करने की प्रक्रिया बाधित होती है।

चरण 3: निष्कर्ष तैयार और रटी हुई सामग्री पर निर्भरता के कारण परंपरागत विषयों में स्वतंत्र विचार और मौलिक अभिव्यक्ति की प्रक्रिया विकसित नहीं हो पाती।

त्वरित सुझाव: कारण बताते समय विषय की परिचितता से आगे बढ़कर तैयार सामग्री, रटने की प्रवृत्ति और मौलिक चिंतन की कमी का संबंध स्पष्ट कीजिए।

5(i). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

दीपावली में घर की साज-सज्जा

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विषय के अनुरूप दृश्य, अनुभव और भावों को क्रमबद्ध करके मौलिक रचनात्मक लेख लिखा जाता है।
- लगभग 120 शब्दों में एक केंद्रीय विचार रखते हुए भाषा को सरल, चित्रात्मक और प्रभावपूर्ण बनाया जाता है।

चरण 1: रूपरेखा तैयार कीजिए प्रस्तावित लेख में दीपावली की तैयारी से शुरुआत होगी। इसके बाद सफाई, रंगोली, दीपक और फूलों से साज-सज्जा का दृश्य आएगा। अंत में परिवार की सहभागिता और खुशियों को सजावट का वास्तविक आधार बताया जाएगा। लेख में निजी अनुभव और आत्मीय दृष्टि का समावेश रहेगा। शीर्षक विषय के अनुकूल रहेगा तथा वर्णन एक ही अनुभव से जुड़ा होगा।

चरण 2: भाषा और प्रस्तुति का ध्यान रखिए वर्णन में रंग, रोशनी और सुगंध से संबंधित शब्दों का प्रयोग वातावरण को सजीव बनाता है। केवल सजावटी वस्तुओं की सूची देने के स्थान पर उनके बीच परिवार की गतिविधियाँ दिखानी चाहिए। अनावश्यक विस्तार से बचते हुए आरंभ, मध्य और अंत के बीच स्वाभाविक संबंध रखना आवश्यक है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख दीपावली में घर की साज-सज्जा

दीपावली आते ही हमारा घर जैसे नई मुसकान ओढ़ लेता है। सुबह से सफाई शुरू हो जाती है। पुरानी वस्तुएँ सँभालते हुए माँ कहती हैं कि उजाला पहले मन में होना चाहिए। आँगन में बहन रंगोली बनाती है और मैं दरवाजे पर गेंदे के फूलों का तोरण लगाता हूँ। शाम ढलते ही मिट्टी के दीपकों की कतारें जगमगा उठती हैं। उनकी सुनहरी लौ रंगोली के रंगों को और निखार देती है। खिड़कियों पर लगी रोशनी मानो तारों को धरती पर बुला लेती है। रसोई से आती मिठाइयों की सुगंध पूरे घर में फैल जाती है। हम सजावट में बेकार कागज और प्लास्टिक से बचते हैं। उस क्षण लगता है कि घर की सबसे सुंदर सजावट परिवार की एकता और सबके चेहरों की खुशी है।

चरण 4: निष्कर्ष इस विषय पर रचनात्मक लेख में घर की सजावट के दृश्य, पारिवारिक सहभागिता और दीपावली की आत्मीयता को लगभग 120 शब्दों में प्रस्तुत करना उपयुक्त है।

त्वरित सुझाव: सजावट की सूची बनाने के बजाय दीपक, रंगोली और परिवार की गतिविधियों को जोड़कर एक जीवंत दृश्य रचिए।

5(ii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

उस दिन जब अचानक धरती काँपने लगी

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुभवपरक रचनात्मक लेख में घटना, तत्काल प्रतिक्रिया और उससे मिली सीख का सुसंबद्ध वर्णन किया जाता है।
- प्रथम पुरुष शैली तथा ध्वनि, गति और भावों का संयत चित्रण पाठक को घटना से जोड़ता है।

चरण 1: घटना की रूपरेखा बनाइए लेख की शुरुआत सामान्य दिनचर्या से होगी, जिससे अचानक आए परिवर्तन का प्रभाव स्पष्ट हो। फिर धरती काँपने का अनुभव, परिवार की प्रतिक्रिया और सुरक्षित स्थान तक पहुँचने का वर्णन आएगा। अंत में सहायता, साहस और जीवन के प्रति संवेदना की सीख रखी जाएगी। पूरा लेख एक घटना पर केंद्रित रहेगा।

चरण 2: अभिव्यक्ति को सजीव और संयत रखिए भय को केवल बताने के बजाय हिलते पंखे, खनकते बरतन और तेज धड़कनों जैसे छोटे विवरणों से व्यक्त किया जा सकता है। फिर भी अतिरंजित दुर्घटनाओं और अनावश्यक विवरणों से बचना चाहिए। कथा में समय का क्रम बनाए रखिए, ताकि सामान्य स्थिति से संकट और फिर राहत तक का परिवर्तन स्वाभाविक लगे।

चरण 3: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख उस दिन जब अचानक धरती काँपने लगी

उस दिन दोपहर को मैं पढ़ रहा था। अचानक मेज हिलने लगी और रसोई में बरतन खनक उठे। पहले लगा कि चक्कर आ रहा है, पर झूलते पंखे को देखकर सब समझ गया। धरती काँप रही थी! माँ ने घबराने के बजाय हमें खिड़कियों से दूर मजबूत मेज के नीचे बैठाया। कंपन थमने पर हम सीढ़ियों से नीचे उतरकर खुले मैदान में पहुँचे। वहाँ पड़ोसियों के चेहरों पर भय साफ दिखाई दे रहा था। मैंने एक वृद्ध को बैठने में सहायता की और पानी दिया। कुछ देर बाद स्थिति सामान्य हुई, लेकिन मन की धड़कनें शांत होने में समय लगा। उस घटना ने सिखाया कि संकट में धैर्य और सही जानकारी बहुत आवश्यक हैं। जीवन की अनिश्चितता के बीच एक दूसरे का सहारा बनना ही सबसे बड़ी ताकत है।

चरण 4: निष्कर्ष इस अनुभवपरक लेख में अचानक आए भूकंप की घटना, भय, संयमित प्रतिक्रिया और मानवीय सहयोग की सीख का क्रमबद्ध चित्रण किया गया है।

त्वरित सुझाव: घटना के तीन पड़ाव याद रखिए: सामान्य स्थिति, अचानक संकट और राहत; अंत में अनुभव से निकली सीख जोड़िए।

5(iii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने का उत्साह

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में अनुभव, कल्पना और भावों का स्वाभाविक मेल होता है।
- विषय के अनुरूप शीर्षक देकर लगभग 120 शब्दों में उत्साह का सजीव चित्र प्रस्तुत करना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय की योजना शीर्षक के बाद प्रथम पुरुष में एक छोटे अनुभव का वर्णन किया जा सकता है। प्रवेश की सूचना से आरंभ करके परिसर, नई मित्रता, ज्ञान और भविष्य की आशाओं का क्रम रखें। वर्णन में उत्साह के साथ जिम्मेदारी का बोध भी व्यक्त हो।

चरण 2: भाव और भाषा का चयन परिसर में पहला कदम रखने की अनुभूति, पुस्तकालय का आकर्षण और नई पहचान बनाने की इच्छा को सहज भाषा में व्यक्त करें। छोटे वाक्य तथा दृश्यात्मक विवरण लेख को प्रभावपूर्ण बनाते हैं। अंत में शिक्षा के अवसर का सार्थक उपयोग करने का संकल्प रखें।

चरण 3: शब्द-सीमा और संगति की जाँच पूर्ण लेख में प्रवेश की खुशी से आरंभ करके नए वातावरण का परिचय और भविष्य का संकल्प प्रस्तुत किया गया है। किसी विशेष विश्वविद्यालय का काल्पनिक इतिहास देने की आवश्यकता नहीं है। निजी अनुभूति विषय से जुड़ी रहनी चाहिए। शीर्षक को अलग रखें और मुख्य लेख को लगभग 120 शब्दों तक सीमित रखें। अनावश्यक पुनरावृत्ति हटाने से भाव

अधिक स्पष्ट और प्रभावशाली होते हैं।

चरण 4: पूर्ण रचनात्मक लेख विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने का उत्साह

आज विश्वविद्यालय में मेरा पहला दिन है। प्रवेश की सूचना मिलते ही लगा, जैसे सपनों को पंख मिल गए हों। सुबह तैयार होते समय मन बार-बार घड़ी की ओर जा रहा था। विशाल प्रवेशद्वार से भीतर आया तो लगा कि संभावनाओं की एक नई दुनिया मेरा स्वागत कर रही है। हरे मैदान, पुस्तकों से भरा पुस्तकालय और विचारों से गूँजती कक्षाएँ मुझे आकर्षित कर रही थीं। नए साथियों से परिचय हुआ तो आरंभिक झिझक भी जाती रही। अब अपनी रुचि के विषय पढ़ने, बहसों में भाग लेने और कुछ नया सीखने का अवसर मिलेगा। घर लौटते समय मन में उत्साह के साथ एक संकल्प भी था—इस अवसर का सदुपयोग करके स्वयं को बेहतर मनुष्य बनाऊँगा।

चरण 5: निष्कर्ष इस लेख में विश्वविद्यालय में प्रवेश का आनंद, नई संभावनाएँ और सीखने का संकल्प व्यक्त हुआ है।

त्वरित सुझाव: विषय पर लिखते समय एक अनुभव चुनें और उसी से जुड़ी अनुभूतियों को क्रम में प्रस्तुत करें।

6. हो जाए न पथ में रात कहीं,

मंज़िल भी तो है दूर नहीं –

यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है !

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,

नीड़ों से झाँक रहे होंगे –

यह ध्यान परो में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है !

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

मुझसे मिलने को कौन विकल ?

मैं होऊँ किसके हित चंचल ?

यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है !

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

[5 अंक]

6(i). बच्चों का नीड़ों से झाँकने का संभावित कारण है :

[1 अंक]

(A) रात्रि का अंधकारयुक्त भयावह वातावरण

(B) माता-पिता प्रदत्त स्नेह, सुरक्षा और भोजन

(C) माता-पिता का सुबह से नीड़ों से बाहर होना

(D) नीड़ और आसपास के वातावरण में पसरा सन्नाटा

सही उत्तर: (B) माता-पिता प्रदत्त स्नेह, सुरक्षा और भोजन

हल:

अवधारणा:

- बच्चों की प्रतीक्षा का कारण चिड़िया के लौटने से मिलने वाला स्नेह, संरक्षण और भोजन है।
- उत्तर के लिए काव्यांश में प्रयुक्त प्रत्याशा और नीड़ों से झाँकने के भाव को जोड़कर समझें।

चरण 1: प्रतीक्षा का भाव पहचानना 'बच्चे प्रत्याशा में होंगे' से स्पष्ट है कि बच्चे माता-पिता के लौटने की आशा में नीड़ों से झाँक रहे हैं। माता-पिता उनके लिए स्नेह, सुरक्षा और भोजन लाते हैं; इसी कारण उनका लौटना बच्चों के लिए सुखद है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में भय को कारण बताया गया है, जबकि पंक्तियों का केंद्र मिलने की आशा है। (C) केवल बाहर रहने की स्थिति बताता है, प्रतीक्षा की मूल आवश्यकता नहीं। (D) के सन्नाटे का उल्लेख काव्यांश में नहीं है। इसलिए (B) सबसे उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है—माता-पिता प्रदत्त स्नेह, सुरक्षा और भोजन।

त्वरित सुझाव: प्रत्याशा शब्द को केवल अनुपस्थिति से नहीं, लौटने पर मिलने वाले सुख से जोड़कर देखें।

6(ii). दिन ढलते ही घर की ओर लौटती चिड़िया के पंरों में चंचलता है तो कवि के कदमों में :

[1 अंक]

- (A) शिथिलता
- (B) व्याकुलता
- (C) गतिशीलता
- (D) भावुकता

सही उत्तर: (A) शिथिलता

हल:

अवधारणा:

- अपनों से मिलने की आशा चिड़िया को सक्रिय करती है।
- कवि के कदमों की स्थिति और उसके हृदय की स्थिति अलग-अलग शब्दों से व्यक्त हुई हैं।

चरण 1: कदमों के लिए प्रयुक्त शब्द देखना कवि पूछता है कि उससे मिलने को कौन व्याकुल है। फिर कहता है—‘यह प्रश्न शिथिल करता पद को’। पद का अर्थ पैर या कदम है; इसलिए कवि के कदमों में शिथिलता आती है।

चरण 2: विकल्पों का अंतर समझना (B) व्याकुलता हृदय की बेचैनी से संबंधित हो सकती है, पर प्रश्न कदमों की दशा पूछता है। (C) गतिशीलता चिड़िया की तेजी के अनुकूल है। (D) भावुकता एक सामान्य भाव है, पंक्ति में कदमों का सटीक विशेषण नहीं। अतः (A) सही है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है—शिथिलता।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में शरीर के जिस अंग की दशा पूछी गई हो, उसके लिए कविता में आए सटीक शब्द को चुनें।

6(iii). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : चिड़िया शीघ्रातिशीघ्र अपनी मंज़िल तक पहुँचना चाहती है।

कारण : गहराती संध्या उसे उसके बच्चों के लिए चिंतित कर रही है।

विकल्प :

[1 अंक]

- (A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।
- (B) कारण सही है, लेकिन कथन गलत है।
- (C) कथन सही है, लेकिन कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन तथा कारण का सत्यापन अलग-अलग करने के बाद उनका कार्य-कारण संबंध जाँचना चाहिए।
- बच्चों से मिलने की चिंता चिड़िया की गति में तेजी लाती है।

चरण 1: कथन की सत्यता कथन सही है। 'यह ध्यान परो में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है' बताता है कि चिड़िया जल्दी अपने नीड़ तक पहुँचना चाहती है।

चरण 2: कारण की सत्यता कारण भी सही है। दिन ढल रहा है और चिड़िया को ध्यान आता है कि उसके बच्चे नीड़ में उसकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। गहराती संध्या में बच्चों तक पहुँचने की चिंता स्वाभाविक है।

चरण 3: व्याख्या का संबंध बच्चों की प्रतीक्षा और उनकी चिंता ही उसके परो को तेज करती है। इसलिए कारण कथन को स्पष्ट करता है। (A) दोनों को गलत और (B) कथन को गलत बताते हैं, इसलिए अनुचित हैं। (C) सही व्याख्या के संबंध को नकारता है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है—कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

त्वरित सुझाव: दोनों वाक्य सही मिलने पर भी यह अवश्य जाँचें कि कारण से कथन की घटना क्यों घटती है।

6(iv). काव्यांश के मूल भाव को स्पष्ट करने वाला/वाले कथन है/हैं :

I. बीता हुआ समय लौटकर नहीं आता।

II. गतिशील समय के साथ चलते हुए लक्ष्य प्राप्ति के लिए संघर्ष करना चाहिए।

III. अपनों से मिलन की आशा हमारे प्रयासों में तीव्रता लाती है।

उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

[1 अंक]

(A) केवल III

(B) I और II

(C) II और III

(D) I, II और III

सही उत्तर: (C) II और III

हल:

अवधारणा:

- मूल भाव वही होता है जिसे कविता की प्रमुख स्थितियाँ और उनका संबंध प्रत्यक्ष रूप से पुष्ट करें।
- समय की गति तथा अपनों से मिलन की आशा जीवन की सक्रियता से जुड़ी हैं।

चरण 1: कथन II और III की जाँच थका पथिक रात होने से पहले मंजिल तक पहुँचने के लिए जल्दी चलता है। यह समय के साथ लक्ष्य की ओर प्रयत्न करने का भाव देता है, अतः II उपयुक्त है। बच्चों की प्रतीक्षा का ध्यान चिड़िया की गति बढ़ाता है; इससे III भी पुष्ट होता है।

चरण 2: कथन I और विकल्पों की जाँच बीता समय वापस न आने का कथन सामान्य सत्य है, लेकिन यहाँ अतीत के न लौटने पर चर्चा नहीं है। कविता ढलते दिन और मिलने की आशा से पैदा होने वाली गति या उसके अभाव का चित्र देती है। इसलिए I मूल भाव नहीं है। (A) में II छूटता है; (B) और (D) में I जुड़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है—II और III।

त्वरित सुझाव: सामान्य रूप से सही कथन को तभी चुनें जब कविता की विशिष्ट पंक्तियाँ उसके मूल भाव का समर्थन करें।

6(v). 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' – कथन की आवृत्ति संकेत करती है :

[1 अंक]

- (A) समय की गतिशीलता की ओर
- (B) काव्यांश के तुकान्त शब्दों की ओर
- (C) संध्या के आगमन की ओर
- (D) कवि की रचनात्मकता की ओर

सही उत्तर: (A) समय की गतिशीलता की ओर

हल:

अवधारणा:

- किसी पंक्ति की बार-बार आवृत्ति कविता के केंद्रीय भाव को उभारती है।
- दिन का लगातार ढलना समय की निरंतर गति का संकेत है।

चरण 1: दोहराई गई पंक्ति का भाव 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' प्रत्येक स्थिति के साथ लौटती है। पंथिक की जल्दी, चिड़ियों की चंचलता और कवि की शिथिलता के बीच भी समय निरंतर आगे बढ़ रहा है। यह आवृत्ति उसी गति का बोध गहरा करती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (B) तुकान्त शब्दों की पहचान बताता है, भावगत संकेत नहीं। (C) संध्या के आने का दृश्य सही है, किंतु बार-बार दोहराने का व्यापक आशय समय की गतिशीलता है। (D) कवि की रचनात्मकता की सामान्य प्रशंसा है और पंक्ति का विशिष्ट अर्थ नहीं बताता।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है—समय की गतिशीलता की ओर।

त्वरित सुझाव: दोहराई गई पंक्ति का आशय पहचानने के लिए देखें कि अलग-अलग दृश्यों में कौन-सा भाव समान बना रहता है।

7(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘उषा’ कविता में कवि ने ग्रामीण अंचल की सुबह का मनोरम वर्णन किया है। आप अपने घर के आसपास होने वाली संध्या के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति-वर्णन में रंग, प्रकाश, ध्वनि और वातावरण के परिवर्तन को प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर व्यक्त किया जाता है।
- उषा में घरेलू जीवन से लिए गए बिंब सुबह को सजीव बनाते हैं। यहाँ उसी संवेदनशील दृष्टि से अपने आसपास की संध्या का स्वतंत्र वर्णन अपेक्षित है।

चरण 1: वर्णन का आधार चुनना घर के आसपास दिखाई देने वाले आकाश, ढलते सूर्य, पेड़ों और लौटते पक्षियों को वर्णन का आधार बनाइए। सुबह के बिंबों को ज्यों का त्यों दोहराने के स्थान पर संध्या के बदलते रंग और मद्धिम पड़ते प्रकाश को व्यक्त करना चाहिए।

चरण 2: उत्तर का आधार स्पष्ट करना वर्णन को समय के क्रम में आगे बढ़ाइए: पहले सूर्यास्त, फिर पक्षियों का लौटना और अंत में तारों का निकलना। लालिमा और ताँबे जैसी चमक दृश्य बिंब हैं; चहचहाहट श्रव्य बिंब है। इनसे संध्या का सौंदर्य केवल रंगों तक सीमित नहीं रहता, उसका शांत और आत्मीय प्रभाव भी व्यक्त होता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर मेरे घर के आसपास संध्या का दृश्य अत्यंत मनोहारी होता है। डूबते सूर्य की सुनहरी किरणें आकाश पर लालिमा बिखेर देती हैं। पेड़ों की चोटियाँ ताँबे-सी चमकने लगती हैं। पक्षी चहचहाते हुए अपने घोंसलों की ओर लौटते हैं। ठंडी हवा पत्तों को धीरे-धीरे हिलाती है। अँधेरा गहराने पर पहला तारा चमक उठता है और वातावरण शांत, सुखद तथा आत्मीय हो जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष संध्या का सौंदर्य ढलते सूर्य की लालिमा, लौटते पक्षियों और धीरे-धीरे फैलती शांति से साकार होता है।

त्वरित सुझाव: संध्या-वर्णन में रंग के साथ पक्षियों की ध्वनि और हवा का स्पर्श जोड़ें; इससे दृश्य अधिक सजीव होगा।

7(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘बादल राग’ कविता में बादलों के लिए प्रयुक्त ‘अशनि-पात से शापित’ तथा ‘गगन-स्पर्शी स्पृद्धा धीर’ विशेषणों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेषणों का सौंदर्य उनके दृश्यात्मक अर्थ और कविता के सामाजिक संकेत को साथ समझने पर खुलता है।
- इन पदों का संबंध कविता में ऊँचे वीर वृक्षों से है, जो बादलों के वज्रपात से धराशायी होते हैं। बादलों की क्रांतिकारी शक्ति इस प्रसंग से प्रकट होती है।

चरण 1: विशेषणों का संदर्भ समझना प्रश्न में इन्हें बादलों के विशेषण कहा गया है, किंतु कविता में ये ऊँचे वृक्षों के प्रसंग में आते हैं। ऊँचाई तथा आकाश से होड़ सत्ता और ऐश्वर्य के अहंकार का बिंब बनते हैं। अशनि-पात का अर्थ बिजली गिरना है; इसलिए उससे शापित होना विनाश का संकेत देता है।

चरण 2: उत्तर का आधार स्पष्ट करना ऊँचे वृक्षों और छोटे पौधों की स्थिति का विरोध भी अर्थ स्पष्ट करता है। विशाल वृक्ष गिरते हैं, जबकि छोटे पौधे बादलों के आने पर प्रसन्न होते हैं। इसीलिए ऊँचाई मात्र प्राकृतिक विवरण नहीं रह जाती; वह विशेषाधिकार का संकेत बनती है। विशेषणों से शक्ति का अभिमान और उसके टूटने का दृश्य एक साथ उभरता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कविता में ये विशेषण वस्तुतः ऊँचे वृक्षों के लिए आए हैं। ‘अशनि-पात से शापित’ में बिजली से आहत होकर गिरने का भयावह दृश्य उभरता है। ‘गगन-स्पर्शी स्पृद्धा धीर’ उनकी ऊँचाई, आकाश से होड़ और दृढ़ता का बोध कराता है। ऐसे वृक्षों का गिरना क्रांति से अहंकारी शोषक वर्ग के पतन का प्रतीक है। इससे बादलों की विनाशकारी शक्ति प्रभावशाली बनती है।

चरण 4: निष्कर्ष विशेषण ऊँचे वृक्षों का विराट बिंब रचकर क्रांतिकारी बादलों के सामने अहंकारी शक्तियों की पराजय व्यक्त करते हैं।

त्वरित सुझाव: इन पदों को वृक्षों और उनके पतन के प्रसंग में पढ़ें; फिर दृश्यार्थ से शोषक वर्ग के प्रतीकात्मक अर्थ तक पहुँचें।

7(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

कृषि-कर्म और कवि-कर्म के बीच के साम्य को ‘छोटा मेरा खेत’ कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उमाशंकर जोशी की कविता में कागज़ के पन्ने को खेत तथा काव्य-रचना को खेती के रूपक में प्रस्तुत किया गया है।
- कृषि और कविता दोनों में बीज का विकास, पोषण और फल प्राप्ति होती है; कविता की फसल पाठकों के आनंद में निरंतर बढ़ती रहती है।

चरण 1: रूपक के घटकों की पहचान किसान अपने खेत में बीज बोता और उसका पोषण करता है। कवि के लिए कागज़ खेत है, भाव बीज है और कल्पना उसे पोषण देती है। शब्द अंकुरित होकर काव्य-रचना का रूप लेते हैं। इन समानताओं को क्रम से रखने पर उत्तर स्पष्ट बनता है।

चरण 2: उत्तर का आधार स्पष्ट करना भाव आने पर कवि उसे कल्पना में विकसित करता है और उपयुक्त शब्दों से अभिव्यक्त करता है। जैसे बीज सीधे तैयार फसल नहीं बनता, वैसे ही भाव को भी रचना बनने के लिए विकास चाहिए। पाठक जब कविता पढ़ता है, तो उसमें निहित रस का आस्वाद लेता है। बार-बार पढ़े जाने पर भी वह रस कम नहीं होता।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कृषि-कर्म में किसान खेत में बीज बोकर उसे विकसित करता है; कवि कागज़ के पन्ने पर भावों के बीज बोता है। कल्पना से उनका पोषण होता है और शब्दों के अंकुर फूटते हैं। रचना पूर्ण होने पर रस की फसल मिलती है। कृषि की फसल कटकर समाप्त होती है, किंतु कविता की फसल पाठकों को बार-बार आनंद देकर कभी समाप्त नहीं होती।

चरण 4: निष्कर्ष भाव-बीज से शब्दों और रस की फसल उगाना कवि-कर्म है; यह कृषि के समान सृजनात्मक होकर भी आनंद की अक्षय

उपज देता है।

त्वरित सुझाव: खेत-कागज़, बीज-भाव, पोषण-कल्पना और फसल-काव्यरस की जोड़ियाँ याद रखकर साम्य के बाद अक्षयता का अंतर लिखें।

8(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘बात सीधी थी पर’ कविता से उद्धृत ‘भाषा के चक्कर में ज़रा टेढ़ी फँस गई’ – पंक्ति से क्या अभिप्राय है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता सहज कथ्य और अनावश्यक भाषायी चमत्कार के बीच उत्पन्न तनाव को व्यक्त करती है।
- अभिव्यक्ति का उद्देश्य बात को स्पष्ट पहुँचाना है। भाषा का प्रदर्शन कथ्य पर हावी हो जाए तो सरल बात भी उलझ जाती है।

चरण 1: पंक्ति का संदर्भ समझना कवि की बात मूलतः सरल थी। उसे अधिक प्रभावशाली बनाने के प्रयास में भाषा के प्रयोग और सजावट इतने बढ़ गए कि स्वाभाविक अर्थ दब गया। टेढ़ी फँसने का आशय कथ्य के संप्रेषण में पैदा हुई इसी उलझन से है।

चरण 2: उत्तर का आधार स्पष्ट करना अतः यह पंक्ति कठिन शब्दों के समर्थन में नहीं है। वह बताती है कि भाषा को विचार के अनुरूप सहज रखना चाहिए, जिससे पाठक मूल भाव तक पहुँच सके।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर इस पंक्ति का आशय है कि कवि की बात सरल थी, पर उसे प्रभावशाली बनाने के लिए किए गए अनावश्यक भाषायी प्रयोगों ने उसे उलझा दिया। भाषा का चमत्कार कथ्य पर हावी हो गया और सहज अर्थ पाठक तक नहीं पहुँच सका।

चरण 4: निष्कर्ष भाषा की अनावश्यक जटिलता सरल विचार के स्वाभाविक संप्रेषण में बाधा बन गई।

त्वरित सुझाव: अर्थ बताते समय सरल कथ्य, भाषा की सजावट और संप्रेषण की बाधा का क्रम बनाए रखें।

8(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप’ प्रसंग के राम अवतारी पुरुष न होकर एक सामान्य मानव थे, उदाहरण सहित सिद्ध कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास के इस प्रसंग में राम का भ्रातृप्रेम और शोक उनके मानवीय पक्ष को प्रकट करते हैं।
- चरित्र संबंधी निष्कर्ष को लक्ष्मण की मूर्च्छा पर राम की प्रतिक्रिया से सिद्ध करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग का आधार लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम धैर्य खो देते हैं। वे भाई को हृदय से लगाकर विलाप करते हैं और उनके बिना अपना जीवन निरर्थक समझते हैं। यह किसी प्रियजन को खो देने के भय से उत्पन्न सामान्य मनुष्य की व्याकुलता है।

चरण 2: व्यवहार से निष्कर्ष राम को पछतावा होता है कि यदि वे वन में भाई से बिछोह का परिणाम जानते तो पिता का वचन भी न मानते। वे लक्ष्मण की माता को उत्तर देने की चिंता भी करते हैं। उनका दुःख, पश्चात्ताप और असहायता अवतारी सर्वशक्तिमत्ता के स्थान पर मानवीय संवेदना दिखाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम व्याकुल होकर रोते हैं। वे कहते हैं कि भाई के बिना जीवन व्यर्थ है और पहले परिणाम जानते तो पिता का वचन न मानते। उनका शोक, असहायता और पश्चात्ताप उन्हें सामान्य स्नेही मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

त्वरित सुझाव: राम की मानवीयता सिद्ध करते समय केवल विशेषण न दें; भाई की मूर्च्छा पर उनका विलाप और पश्चात्ताप उदाहरण बनाइए।

8(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘बगुलों के पंख’ कविता के आधार पर नभ में पाँती-बँधे उड़ते बगुलों के सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में आकाश और बगुलों के रंगों का विरोध दृश्य को आकर्षक बनाता है।
- प्रकृति के सौंदर्य का प्रभाव कवि की दृष्टि और मन की तल्लीनता से व्यक्त होता है।

चरण 1: दृश्य और रंग पहचानिए काले बादलों से भरे आकाश में सफेद बगुले एक पंक्ति में उड़ रहे हैं। अँधेरे बादलों की पृष्ठभूमि पर उनके उजले पंख अधिक चमकते हैं। यह श्वेत और श्याम रंगों का आकर्षक सामंजस्य है।

चरण 2: कवि पर प्रभाव समझिए बगुलों की पंक्तिबद्ध उड़ान में सुंदर गति और लय है। उनका सौंदर्य कवि को बाँध लेता है और उसकी आँखें उसी दृश्य में अटक जाती हैं। वह इस दृश्य को देर तक निहारना चाहता है; इसी तल्लीनता से प्रकृति के मोहक आकर्षण का अनुभव व्यक्त होता है।

चरण 3: निष्कर्ष काले बादलों से भरे आकाश में पंक्तिबद्ध उड़ते बगुलों के सफेद पंख अत्यंत उजले लगते हैं। श्यामल पृष्ठभूमि और उजले पंखों का विरोध दृश्य को मनोहर बनाता है। उनकी लयपूर्ण उड़ान कवि को इतना मोह लेती है कि उसकी दृष्टि वहीं अटक जाती है।

त्वरित सुझाव: वर्णन में तीन बातें जोड़िए: काले बादल, सफेद पंख और सौंदर्य से बँधी कवि की दृष्टि।

9. रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस ख्याल से ढोलक बजाता हो, किंतु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बूढ़े-बच्चे-जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन-शक्ति-शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। अवश्य ही ढोलक की आवाज़ में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे।

[5 अंक]

9(i). ‘रात्रि की विभीषिका’ से अभिप्राय है :

[1 अंक]

- (A) रात्रि का सन्नाटा
- (B) रात्रि का भयावहपन
- (C) रात्रि का अंधकार
- (D) रात्रि की स्पंदनहीनता

सही उत्तर: (B) रात्रि का भयावहपन

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के शब्दों और संदर्भ के आधार पर सही विकल्प चुनना चाहिए।
- शाब्दिक अर्थ और प्रसंग में व्यक्त भाव का अंतर समझना अर्थ-बोध का आधार है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण पहचानिए विभीषिका का अर्थ भय उत्पन्न करने वाली भीषण स्थिति है। यहाँ रोग, मृत्यु और असहायता से घिरी रात का भयावह वातावरण अभिप्रेत है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच कीजिए (A) सन्नाटा और (C) अंधकार रात की विशेषताएँ हो सकती हैं, पर वे विभीषिका का पूरा अर्थ नहीं बताते। (D) स्पंदनहीनता निश्चेष्टता का भाव है; यह भी भयावहता का पर्याय नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष रात्रि का भयावहपन अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का संकेत शब्द रेखांकित करें और फिर गद्यांश की निर्णायक पंक्ति से विकल्प मिलाएँ।

9(ii). रात्रि की विभीषिका को गाँव में कौन चुनौती देता था ?

[1 अंक]

- (A) जंगली जानवरों की आवाज़
- (B) रात्रि का सूनापन
- (C) पहलवान के लड़के
- (D) पहलवान की ढोलक

सही उत्तर: (D) पहलवान की ढोलक

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के शब्दों और संदर्भ के आधार पर सही विकल्प चुनना चाहिए।
- शाब्दिक अर्थ और प्रसंग में व्यक्त भाव का अंतर समझना अर्थ-बोध का आधार है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण पहचानिए गद्यांश की पहली पंक्ति स्पष्ट कहती है कि रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी। ढोलक की ध्वनि ग्रामीणों को मानसिक शक्ति देती थी।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच कीजिए (A) जंगली जानवरों की आवाज़ का उल्लेख नहीं है। (B) रात्रि का सूनापन भय बढ़ाने वाला वातावरण है। (C) पहलवान के लड़कों को गद्यांश में इस चुनौती का कर्ता नहीं बताया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष पहलवान की ढोलक अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का संकेत शब्द रेखांकित करें और फिर गद्यांश की निर्णायक पंक्ति से विकल्प मिलाएँ।

9(iii). ढोलक की आवाज़ का गाँववालों पर पड़ने वाले प्रभाव के विषय में असत्य कथन है :

[1 अंक]

- (A) नसों में बिजली दौड़ जाती थी।
- (B) उनमें संजीवनी की शक्ति भरती थी।
- (C) मृत्यु का सामना करने की शक्ति देती थी।
- (D) मृत्यु को पराजित करने की ताकत देती थी।

सही उत्तर: (D) मृत्यु को पराजित करने की ताकत देती थी।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के शब्दों और संदर्भ के आधार पर सही विकल्प चुनना चाहिए।
- शाब्दिक अर्थ और प्रसंग में व्यक्त भाव का अंतर समझना अर्थ-बोध का आधार है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण पहचानिए गद्यांश में कहा गया है कि ढोलक की आवाज़ रोग दूर नहीं कर सकती थी और महामारी की सर्वनाश शक्ति नहीं रोक सकती थी। उसका प्रभाव मानसिक साहस देना था; वह मृत्यु को पराजित नहीं करती थी।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच कीजिए (A) स्नायुओं में बिजली दौड़ना और (B) संजीवनी शक्ति भरना गद्यांश में सीधे आए हैं। (C) मृत्यु का सामना करने की शक्ति भी सही है क्योंकि लोग मृत्यु से डरते नहीं थे। अतः ये तीनों सत्य कथन हैं।

चरण 3: निष्कर्ष मृत्यु को पराजित करने की ताकत देती थी। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का संकेत शब्द रेखांकित करें और फिर गद्यांश की निर्णायक पंक्ति से विकल्प मिलाएँ।

9(iv). गद्यांश के अनुसार गाँववालों की दीन-हीन स्थिति का प्रमुख कारण था :

[1 अंक]

- (A) निर्धनता
- (B) अतिवृष्टि
- (C) संक्रामक रोग
- (D) साधनहीनता

सही उत्तर: (C) संक्रामक रोग

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के शब्दों और संदर्भ के आधार पर सही विकल्प चुनना चाहिए।
- शाब्दिक अर्थ और प्रसंग में व्यक्त भाव का अंतर समझना अर्थ-बोध का आधार है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण पहचानिए गद्यांश में बुखार और महामारी की सर्वनाश शक्ति का स्पष्ट उल्लेख है। गाँव के लोग इसी संक्रामक रोग से पीड़ित होकर अर्द्धमृत और शक्तिहीन हो गए थे। प्रश्न उनकी दीन-हीन स्थिति का प्रमुख कारण पूछता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच कीजिए (A) निर्धनता और (D) साधनहीनता उपचार की कमी से जुड़ी परिस्थितियाँ हैं, पर यहाँ व्यापक बीमारी का प्रत्यक्ष कारण महामारी है। (B) अतिवृष्टि का कोई उल्लेख नहीं है; इसलिए उसे कारण मानना पाठ से बाहर की बात होगी।

चरण 3: निष्कर्ष संक्रामक रोग अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का संकेत शब्द रेखांकित करें और फिर गद्यांश की निर्णायक पंक्ति से विकल्प मिलाएँ।

9(v). 'बिजली दौड़ जाती थी' – का आशय है :

[1 अंक]

- (A) वायु का प्रवाह होने लगता था
- (B) रक्त का संचार होने लगता था
- (C) बिजली का प्रवाह होने लगता था
- (D) चेतना का संचार हो जाता था

सही उत्तर: (D) चेतना का संचार हो जाता था

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के शब्दों और संदर्भ के आधार पर सही विकल्प चुनना चाहिए।
- शाब्दिक अर्थ और प्रसंग में व्यक्त भाव का अंतर समझना अर्थ-बोध का आधार है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण पहचानिए स्पंदन-शक्ति-शून्य स्नायुओं में बिजली दौड़ने का अर्थ यह है कि निर्बल लोगों में उत्साह, चेतना और साहस जाग उठते थे। ढोलक की आवाज़ उनके मानसिक जड़त्व को दूर करके उन्हें जीवन का अनुभव कराती थी।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच कीजिए (A) वायु का प्रवाह और (B) रक्त का संचार शारीरिक प्रक्रियाएँ हैं, जबकि यहाँ भावात्मक प्रभाव बताया गया है। (C) बिजली का वास्तविक प्रवाह भी अभिप्रेत नहीं है। इस रूपक में जागी हुई चेतना को बिजली जैसा तीव्र बताया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष चेतना का संचार हो जाता था अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का संकेत शब्द रेखांकित करें और फिर गद्यांश की निर्णायक पंक्ति से विकल्प मिलाएँ।

10(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘काले मेघा पानी दे’ पाठ में मेंढक मंडली पर पानी फेंके जाने को ‘पानी की बुवाई’ कहा गया है। इस विषय में आपकी क्या राय है ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में जीजी पानी देने को वर्षा के लिए किया गया त्याग मानती हैं। बीज बोकर अधिक फसल मिलने की उपमा से वे अपना विचार समझाती हैं।
- उत्तर में लोकविश्वास का सांस्कृतिक आशय और उसके प्रति अपनी विवेकपूर्ण राय, दोनों स्पष्ट करने चाहिए।

चरण 1: प्रसंग और तर्क सूखे के समय मेंढक मंडली पर पानी डालने से लेखक को पानी की बर्बादी दिखाई देती है। जीजी इसके विपरीत कहती हैं कि जैसे किसान कुछ बीज धरती को देकर अधिक अन्न पाता है, वैसे ही थोड़ा पानी देने से अधिक पानी मिलने की आशा की जाती है। इसमें सामूहिक विश्वास और त्याग का भाव प्रधान है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर मेरे विचार में ‘पानी की बुवाई’ पानी देकर वर्षा पाने की लोकआस्था का प्रतीक है। जैसे बीज देकर फसल मिलती है, वैसे ही जीजी थोड़ा पानी देकर अधिक जल मिलने की आशा करती हैं। इसमें त्याग की सीख है, वैज्ञानिक आधार नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष यह उपमा त्याग और लोकआस्था व्यक्त करती है; इसे वर्षा कराने का वैज्ञानिक उपाय नहीं मानना चाहिए।

त्वरित सुझाव: जीजी के बीज वाले तर्क को लिखकर लोकआस्था और वैज्ञानिक तथ्य में अंतर स्पष्ट कीजिए।

10(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘भक्तिन’ पाठ में महादेवी जी ने भक्तिन और अपने संबंधों की तुलना किससे और क्यों की है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- साहित्यिक तुलना का आशय केवल वस्तुओं के नाम बताना नहीं, बल्कि उनके द्वारा संबंध की प्रकृति स्पष्ट करना है।
- भक्तिन की उपस्थिति लेखिका के घरेलू जीवन का स्वाभाविक अंग बन गई है; संबंध को केवल मजदूरी या नौकरी से नहीं समझा जा सकता।

चरण 1: तुलना का आशय महादेवी भक्तिन को सामान्य नौकर मानना असंगत बताती हैं। वे घर में आने-जाने वाले अँधेरे-उजाले तथा आँगन में फूलने वाले गुलाब और आम का उदाहरण देती हैं। ये घर के सहज अंग हैं, किसी आदेश से बँधे सेवक नहीं। इसी तरह भक्तिन का संबंध आत्मीयता, अधिकार और साथ रहने से बना है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर महादेवी जी भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत मानती हैं, जितना घर के अँधेरे-उजाले तथा आँगन के गुलाब और आम को सेवक मानना। भक्तिन उनके जीवन का सहज, अभिन्न अंग है; दोनों का संबंध आत्मीयता का है, केवल सेवक-स्वामी का नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष तुलना घर के अँधेरे-उजाले, गुलाब और आम से है, क्योंकि भक्तिन लेखिका के जीवन का स्वाभाविक अंग है।

त्वरित सुझाव: तुलना के साथ उसका कारण अवश्य लिखिए: घरेलू जीवन का अभिन्न अंग और आत्मीय संबंध।

10(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘श्रम विभाजन और जाति प्रथा’ पाठ के आधार पर लेखक के ‘समता’ संबंधी विचारों की व्याख्या कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समता का अर्थ सब मनुष्यों की क्षमताएँ एक जैसी मान लेना नहीं, बल्कि व्यवहार और अवसरों में समानता स्थापित करना है।
- वंश, सामाजिक परिवेश और व्यक्तिगत प्रयत्न से उत्पन्न भिन्नताओं के बावजूद जन्म के आधार पर किसी के अवसर नहीं रोकने चाहिए।

चरण 1: लेखक का तर्क आंबेडकर स्वीकार करते हैं कि मनुष्य शारीरिक वंशपरंपरा, सामाजिक विरासत और अपने प्रयत्नों के कारण भिन्न होते हैं। लेकिन आरंभिक सुविधाओं की असमानता किसी व्यक्ति की योग्यता का उचित मापदंड नहीं है। इसलिए समाज को समान अवसर देने चाहिए, जिससे हर व्यक्ति अपनी क्षमता विकसित कर सके। समता लोकतांत्रिक व्यवहार का मार्गदर्शक सिद्धांत है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लेखक मानते हैं कि मनुष्य वंश, सामाजिक परिवेश और प्रयत्नों से भिन्न होते हैं, फिर भी सबके साथ समान व्यवहार होना चाहिए। जन्मगत भेद योग्यता के विकास में बाधक न बनें। सबको समान अवसर देकर ही उनकी क्षमता का विकास और न्यायपूर्ण समाज संभव है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक के लिए समता समान व्यवहार और समान अवसर का सिद्धांत है, जो जन्मगत विषमता का प्रभाव घटाता है।

त्वरित सुझाव: समता को समान क्षमता मत लिखिए; समान व्यवहार और क्षमता विकसित करने के अवसरों पर जोर दीजिए।

11(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘भक्तिन’ पाठ में वर्णित किन्हीं तीन समस्याओं का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी सामाजिक समस्या की पहचान के साथ पाठ का ठोस प्रसंग देना आवश्यक है।
- भक्तिन का जीवन स्त्री-विरोधी व्यवहार, संपत्ति से वंचित करने की प्रवृत्ति और ग्रामीण सत्ता के अन्याय को सामने लाता है।

चरण 1: तीन समस्याओं के उदाहरण पहली समस्या लिंगभेद है। भक्तिन की तीन बेटियाँ होने पर सास और जिठानियाँ उसका तिरस्कार करती हैं; पुत्रों वाली जिठानियों और उनकी संतानों को बेहतर भोजन मिलता है। दूसरी समस्या विधवा की संपत्ति पर परिवार की निगाह है। पति की मृत्यु के बाद संबंधी भक्तिन का पुनर्विवाह कराकर उसकी संपत्ति पर अधिकार करना चाहते हैं। तीसरी समस्या सामंती शोषण है। लगान न दे पाने पर जमींदार उसे कड़ी धूप में खड़ा करके अपमानित करता है। इन प्रसंगों में अन्याय का आधार अलग-अलग है: पुत्र को वरीयता देना, विधवा के अधिकारों को न मानना और आर्थिक निर्बलता का लाभ उठाना। भक्तिन इन परिस्थितियों में भी आत्मसम्मान बचाने का प्रयास करती है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर पाठ में लिंगभेद है: तीन बेटियों की माँ भक्तिन उपेक्षित रहती है, जबकि पुत्रों वाली जिठानियों को अच्छा भोजन मिलता है। विधवा-शोषण भी है: पति की मृत्यु के बाद संबंधी पुनर्विवाह कराकर उसकी संपत्ति हथियाना चाहते हैं। सामंती अत्याचार का उदाहरण है: लगान न चुका पाने पर जमींदार भक्तिन को कड़ी धूप में खड़ा करके अपमानित करता है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन के जीवन में लिंगभेद, विधवा की संपत्ति पर अधिकार की कोशिश और जमींदारी शोषण के ठोस उदाहरण मिलते हैं।

त्वरित सुझाव: तीन अलग समस्याएँ चुनिए और हर समस्या के साथ भक्तिन के जीवन का एक स्पष्ट प्रसंग जोड़िए।

11(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘बाज़ार दर्शन’ पाठ के संदर्भ में लिखिए कि ‘पर्चेजिंग पावर’ से क्या अभिप्राय है ? क्या इसका उपयोग सकारात्मक कार्यों के लिए भी किया जा सकता है ? उदाहरण सहित लिखिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- क्रयशक्ति का अर्थ वस्तुएँ खरीदने की आर्थिक क्षमता है; इसका होना और उसका विवेकपूर्ण उपयोग करना अलग बातें हैं।
- पाठ आवश्यकता के अनुसार खरीदारी का समर्थन करता है और धन के प्रदर्शन से उपजी अनावश्यक खरीदारी की आलोचना करता है।

चरण 1: शब्द का अर्थ और पाठ का संकेत ‘पर्चेजिंग पावर’ का सीधा अर्थ क्रयशक्ति है। पैसे के बल पर मनुष्य बाज़ार की बहुत-सी वस्तुएँ खरीद सकता है। किंतु लेखक की दृष्टि में केवल खरीद सकना पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता स्पष्ट न हो तो मनुष्य आकर्षण में फँसकर गैरज़रूरी वस्तुएँ खरीद लेता है। इसलिए इस शक्ति का मूल्य उसके संयमित और उद्देश्यपूर्ण प्रयोग से तय होगा।

चरण 2: सकारात्मक उपयोग को उदाहरण से समझना इस शक्ति से भोजन, उपयोगी पुस्तकें और ज़रूरी दवाएँ खरीदना सकारात्मक उपयोग है। किसी ज़रूरतमंद विद्यार्थी को पुस्तकें दिलाना भी इसी का उपयोग है। यह उदाहरण विवेकपूर्ण उपयोग को स्पष्ट करता है; इसे पाठ की कोई अलग घटना समझकर नहीं लिखना चाहिए। प्रश्न के दोनों हिस्सों को जोड़ते हुए उत्तर में अर्थ, उपयोग और उदाहरण तीनों आएँगे।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर ‘पर्चेजिंग पावर’ का अभिप्राय व्यक्ति की क्रयशक्ति, अर्थात् धन के बल पर वस्तुएँ खरीद सकने की क्षमता है। इसका सकारात्मक उपयोग संभव है, यदि खरीदारी वास्तविक आवश्यकताओं के अनुसार की जाए। उदाहरणतः ज़रूरतमंद विद्यार्थी को पुस्तकें या रोगी को दवाएँ खरीदकर देना इसका उपयोगी प्रयोग है। धन का दिखावा करने के बजाय विवेकपूर्वक आवश्यकता पूरी करना ही उचित है।

चरण 4: निष्कर्ष क्रयशक्ति को विवेक और आवश्यकता से जोड़कर शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सहायता जैसे सकारात्मक उद्देश्यों में लगाया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले क्रयशक्ति का अर्थ लिखिए, फिर एक ठोस उपयोगी उदाहरण देकर उसे आवश्यकता और विवेक से जोड़िए।

11(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘शिरीष के फूल’ पाठ में शिरीष के नए और पुराने फूलों द्वारा जीवन के किस सत्य को उजागर किया गया है ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष के माध्यम से लेखक जीवन में परिवर्तन और नवीनता की अनिवार्यता को स्पष्ट करता है।
- पुराने का जड़ होकर स्थान पकड़े रहना जीवन की प्रगति के प्रतिकूल है; नई पीढ़ी को अवसर मिलना चाहिए।

चरण 1: प्राकृतिक परिवर्तन का आशय प्रश्न में नए और पुराने फूलों का उल्लेख है। पाठ में पुराने कठोर फलों का नए फूल आने पर भी पेड़ से चिपके रहना विशेष अर्थ रखता है। नए फूल-पत्ते उन्हें धकेलकर जगह लेते हैं। इस प्राकृतिक दृश्य का आशय यह है कि जीवन में नया आता है और पुराना अंततः हटता है। किसी अवस्था या अधिकार को सदा स्थिर नहीं रखा जा सकता।

चरण 2: मानव जीवन से संबंध लेखक इस दृश्य को मनुष्य की जड़ता और पद से चिपके रहने की प्रवृत्ति से जोड़ता है। समय का प्रवाह रुकता नहीं; परिवर्तन को अस्वीकार करने वाला व्यक्ति प्रगति में बाधा बन जाता है। नई पीढ़ी और नए विचारों को स्थान देना जीवन की स्वाभाविक गति को स्वीकार करना है। इसलिए संदेश केवल फूलों के खिलने-मुरझाने का नहीं, समयानुकूल बदलने का भी है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर शिरीष में नए का आगमन और पुराने का हटना जीवन में परिवर्तन की अनिवार्यता प्रकट करता है। पाठ में पुराने कठोर फल नए फूल आने पर भी चिपके रहते हैं, पर नई वृद्धि उन्हें हटा देती है। इसी प्रकार मनुष्य को पुरानी जड़ता और अधिकार-मोह छोड़कर नए विचारों तथा नई पीढ़ी को स्थान देना चाहिए। परिवर्तन स्वीकार करना ही जीवन की स्वाभाविक गति है।

चरण 4: निष्कर्ष जीवन का सत्य निरंतर परिवर्तन है; पुरानी जड़ता छोड़कर नवीनता को स्थान देना आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के फूलों वाले संकेत को पाठ के पुराने कठोर फलों और नई वृद्धि के प्रसंग से जोड़कर परिवर्तन का संदेश स्पष्ट कीजिए।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

“ ‘सिल्वर वैडिंग’ कहानी में ‘टाई-सूट पहनना आना चाहिए लेकिन धोती-कुर्ता अपनी पोशाक है यह नहीं भूलना चाहिए।’ ” – यह बात यशोधर बाबू ने किस संदर्भ में कही ? इसका क्या आशय है ?

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू के विचारों में आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं और अपनी सांस्कृतिक पहचान के बीच संतुलन का आग्रह है।
- कहानी में पीढ़ियों का अंतर पहनावे, रहन-सहन और पारिवारिक उत्सव की बदलती शैली से उभरता है।

चरण 1: कथन का संदर्भ स्पष्ट करना वर्षगाँठ की पार्टी के आधुनिक वातावरण में यशोधर बाबू को किशनदा और उनकी सीख याद आती है। उनके स्मरण में सुबह सैर पर निकले किशनदा की छवि उभरती है: कुर्ता-पजामा, ऊनी गाउन, विलायती टोपी और देशी खड़ाऊँ। इस वेशभूषा में देशी और विलायती वस्तुओं का मेल था। टाई-सूट सीखने पर भी धोती-कुर्ते को अपनी पोशाक मानने की बात किशनदा की सीख थी, जिसे यशोधर बाबू याद करते हैं। इसलिए संदर्भ में किशनदा का उल्लेख आवश्यक है।

चरण 2: कथन के दोनों पक्षों का आशय ‘टाई-सूट पहनना आना चाहिए’ का अर्थ आधुनिक व्यवहार और अवसरानुकूल ढंग अपनाने की उपयोगिता स्वीकार करना है। ‘धोती-कुर्ता अपनी पोशाक है’ में अपनी परंपरा से आत्मीय संबंध का बोध है। यशोधर बाबू केवल बाहरी नकल को प्रगति नहीं मानते। वे चाहते हैं कि बच्चे नई सुविधाओं और तौर-तरीकों से परिचित हों, किंतु अपनी संस्कृति और पारिवारिक मूल्यों के प्रति सम्मान भी बनाए रखें। यह कथन उनके संस्कार और बच्चों की आधुनिक जीवनदृष्टि के अंतर को समझने में सहायक है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में उत्तर वर्षगाँठ की पार्टी के आधुनिक वातावरण में यशोधर बाबू को किशनदा की सीख याद आती है। वे सुबह की सैर पर निकले किशनदा की छवि स्मरण करते हैं: कुर्ता-पजामा, ऊनी गाउन, विलायती टोपी और देशी खड़ाऊँ। उनकी वेशभूषा में देशी-विलायती का मेल था। टाई-सूट पहनना सीखने पर भी धोती-कुर्ते को अपनी पोशाक मानने की बात किशनदा की इसी सीख का सार है। आशय है कि आधुनिक तौर-तरीके अपनाना उपयोगी है, किंतु अपनी संस्कृति और पहचान भूलना उचित नहीं। यशोधर बाबू इस स्मरण के माध्यम से आधुनिकता के बीच अपनी परंपरा और जीवन-मूल्यों से जुड़े रहने का आग्रह प्रकट करते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष यह कथन आधुनिकता की उपयोगिता स्वीकार करते हुए अपनी सांस्कृतिक पहचान और पारिवारिक संस्कार सँजोए रखने का आग्रह करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को दो हिस्सों में रखिए: पहले नई और पुरानी पीढ़ी का संदर्भ, फिर टाई-सूट और धोती-कुर्ते के प्रतीकात्मक अर्थ।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

‘जूझ’ कहानी में बाल मनोविज्ञान का बड़ा ही सूक्ष्म वर्णन हुआ है। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाल मनोविज्ञान का अर्थ बालक की इच्छाओं, आशंकाओं, संकोच और प्रेरणाओं को उसकी परिस्थितियों के संदर्भ में समझना है। लेखक आनंद की पढ़ने की लगन और विद्यालय के अनुभव इस प्रश्न का आधार हैं।
- उसकी सामाजिक स्थिति और शिक्षक का व्यवहार उसके व्यक्तित्व पर सीधा प्रभाव डालते हैं। उत्तर में केवल कहानी का घटनाक्रम नहीं, बल्कि घटना से प्रकट मानसिक अवस्था भी बतानी चाहिए। पढ़ाई की इच्छा, उपहास से उपजा संकोच और शिक्षक से मिली सृजनात्मक प्रेरणा परस्पर जुड़े उदाहरण हैं।

चरण 1: प्रसंग और उदाहरणों की योजना पहले आनंद की पढ़ने की तीव्र इच्छा और पिता के विरोध के बीच उसका मानसिक संघर्ष स्पष्ट करेंगे। फिर विद्यालय में उसके पहनावे और नाम पर हँसी के कारण उत्पन्न हीनभावना का उल्लेख करेंगे। अंत में न. वा. सौंदलगेकर के कविता पढ़ाने से जागे आत्मविश्वास और काव्यरुचि का उदाहरण देंगे। इससे स्पष्ट होगा कि बालमन अपमान से सिकुड़ता है, किंतु सहानुभूतिपूर्ण प्रेरणा मिलने पर अपनी प्रतिभा विकसित करता है।

चरण 2: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर ‘जूझ’ में आनंद के अनुभव बालमन की संवेदनशीलता प्रकट करते हैं। पिता के विरोध के बावजूद उसकी पढ़ने की उत्कट इच्छा बनी रहती है। खेत में काम करते हुए भी वह विद्यालय जाने की योजना बनाता है। विद्यालय पहुँचने पर पुराने पहनावे और नाम को लेकर साथियों के उपहास से वह संकुचित होता है। यह बालक की स्वाभिमान और स्वीकार्यता की आवश्यकता दिखाता है। न. वा. सौंदलगेकर का भावपूर्ण कविता-पाठ उसमें कल्पना और सृजन का उत्साह जगाता है। वह खेतों में भी कविताएँ गुनगुनाने और तुकबंदी करने लगता है। इस प्रकार उपेक्षा, संकोच, प्रेरणा और आत्मविश्वास का सूक्ष्म चित्रण हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष आनंद की शिक्षा के लिए छटपटाहट, उपहास से उत्पन्न संकोच और शिक्षक की प्रेरणा से विकसित कवित्व बाल मनोविज्ञान के सजीव उदाहरण हैं।

त्वरित सुझाव: हर उदाहरण के साथ उससे व्यक्त मानसिक अवस्था अवश्य जोड़ें; केवल कहानी का सार लिखने से बाल मनोविज्ञान स्पष्ट नहीं होता।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

“मुअनजो-दड़ो ताम्र काल के शहरों में न केवल सबसे बड़ा शहर था बल्कि सबसे उत्कृष्ट शहर भी था।” खुदाई में मिले अवशेषों के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्विक अवशेष किसी सभ्यता की नगर योजना, स्वच्छता, तकनीकी दक्षता और सामाजिक जीवन के प्रमाण होते हैं। मुअनजो-दड़ो की उत्कृष्टता को उसके भौतिक अवशेषों से सिद्ध करना है।
- भवनों और सार्वजनिक सुविधाओं का संतुलन इस नगर के नागरिक दृष्टिकोण की विशेषता है। नगर की महानता के लिए केवल विशाल आकार पर्याप्त नहीं है। नियोजित सड़कें, जलनिकासी, पक्के भवन और सामुदायिक सुविधाएँ नागरिक जीवन की विकसित व्यवस्था का संकेत देती हैं।

चरण 1: प्रमाणों को तर्क से जोड़ना उत्तर का आधार पाठ में उल्लिखित नगर के अवशेष होंगे। सीधी सड़कें और गलियाँ नियोजित बसावट दर्शाती हैं। ढकी नालियाँ, स्नानघर और कुएँ स्वच्छता तथा जल-व्यवस्था का प्रमाण हैं। विशाल स्नानागार और अन्नागार सामुदायिक जीवन की सुव्यवस्था दिखाते हैं। मुहरें, मूर्तियाँ और आभूषण शिल्प तथा कलात्मक रुचि के प्रमाण हैं। इन निष्कर्षों को जोड़कर कथन की पुष्टि करनी चाहिए; किसी अप्रमाणित राजा या राजवंश का विवरण आवश्यक नहीं है।

चरण 2: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर मुअनजो-दड़ो के अवशेष उसकी विशालता और उत्कृष्ट नगर योजना के प्रमाण हैं। सीधी सड़कें तथा व्यवस्थित गलियाँ सुनियोजित बसावट दिखाती हैं। पकी ईंटों के मकान, आँगन, स्नानघर और कुएँ विकसित घरेलू सुविधाओं का परिचय देते हैं। ढकी हुई नालियों की व्यवस्था स्वच्छता के प्रति सजगता दर्शाती है। विशाल स्नानागार और अन्नागार सुव्यवस्थित सामुदायिक जीवन का संकेत देते हैं। मुहरें, मूर्तियाँ, आभूषण और अन्य शिल्प-वस्तुएँ कलात्मक रुचि तथा तकनीकी कौशल प्रकट करती हैं। यहाँ राजसी भव्यता की अपेक्षा सामान्य नागरिकों की सुविधाओं पर अधिक ध्यान दिखाई देता है। इसलिए यह नगर ताम्रकालीन सभ्यता की उत्कृष्ट उपलब्धि माना जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष नगर के आवास, सड़कें, जलनिकासी और सामुदायिक भवन मिलकर मुअनजो-दड़ो की उत्कृष्ट नागरिक सभ्यता की पुष्टि करते हैं।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक अवशेष के बाद उसका महत्त्व बताइए: नालियाँ स्वच्छता, सड़कें योजना और शिल्प-वस्तुएँ कलात्मक दक्षता सिद्ध करती हैं।